आयु निर्णय

– एक विश्लेषण

विषय सूची

पाठ सं.	पाठ	पृष्ठ संख्या
1.	आयुर्दाय	2
2.	आयु खण्ड	5
3.	मारकेश	8
4.	बालारिष्ट	12
5.	अरिष्टभंग	17
6.	गण्डान्त जन्म	19
7.	आयु निर्णय	22
8.	जैमिनी आयुर्दाय	24
9.	पिण्डायु	32
10.	अंशायु	41
11.	निसर्गायु	45
12.	आयु निर्णय की अन्य विधियाँ	46
13.	आयु निर्णय – उपसंहार	54
14.	किस प्रकार की मृत्यु	55
15.	मृत्यु का समय–निर्धारण	57
16.	उपसंहार	65
17.	ग्रन्थ सूची	66

Future Point

1. आयुर्दाय

''फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिणः।
को वक्ता तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना।।''

ज्योतिषीगण भविष्य का केवल संकेत ही दे सकते हैं। भविष्य में क्या होना निश्चित है यह केवल स्रष्टा ब्रह्म ही बता सकते हैं।

यह श्लोक आयु निर्णय के लिए सर्वाधिक सटीक बैठता है।

आयु निर्णय जैसे विषयों का निर्धारण हम मानव नहीं कर सकते। ये विषय सर्वोच्च शक्ति के हाथों में हैं और आयु निर्णय के इच्छुक किसी ज्योतिषी के लिए शुद्ध निर्णय देने के क्रम में इस सर्वोच्च शक्ति की सहायता आवश्यक है।

आयु निर्णय एक अत्यन्त गूढ़ एवं गम्भीर विषय है और इसमें गणितीय संगणना के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ शामिल है। आयु निर्णय की विविध प्रक्रियाओं के द्वारा जाँच के बावजूद ज्योतिषी के लिए किसी जातक को उसकी मृत्यु के विषय में बताना प्रायः मना है। यदि आवश्यक ही हो तो वह कोई अत्यन्त सूक्ष्म संकेत दे सकता है।

आयु निर्णय की गणना की लगभग 82 विधियाँ हैं, किन्तु ऐसी कोई विधि नहीं है जो सटीक परिणाम दे सके। कई विधियों के द्वारा यदि आयु एक सी प्राप्त हो तो एक सीमा तक उसे स्वीकार किया जा सकता है।

हमारे धर्म में सावित्री और सत्यवान तथा मार्कण्डेय ऋषि की कथाओं जैसी अनेक कथाएँ हैं जिनमें मृत्यु को प्राप्त हुए लोगों की आयु की वृद्धि ईश्वर ने स्वयं की है। इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर के आशीर्वाद से आयु–सीमा में वृद्धि या मनुष्य के वर्तमान जीवन के कर्मों के आधार पर आयु में ह्रास हो सकता है।

''ये धर्मकर्मनिरता विजितेन्द्रिया ये,
ये पथ्यभोजनरता द्विजदेवभक्ताः।
लोके नरा दधति ये कुलशीललीला,
स्तेषामिदं कथितमायुरुदारधीमिः।।''

– मानसागरी

जो मनुष्य बचपन से ही जितेन्द्रिय, धर्म कर्म में निरत, पथ्यभोजी (कम आहार करने वाले), सदाचारी, ब्राह्मण और देवताओं के भक्त, अपने कुलाचार का पालन करने वाले होते हैं वे मनुष्य गणितागत आयु या उससे भी अधिक आयु पर्यन्त जीते हैं।

Future Point

"ये पापलुब्धाश्चौराश्च देवब्राह्मणनिन्दकाः।
परदाररता ये च ह्यकाले मरणं भवेत्।।"

—मानसागरी

जो पापाचरण करने वाला होता है, जो लोभी, चोर, देव और ब्राह्मण का निन्दक परस्त्रीगामी होता है, उसकी अकाल मृत्यु होती है।

संक्षेप में, लोग जो बाल्यावस्था से ही सच्चरित-संयमित जीवन व्यतीत करते हैं, जो उत्तम आचरण का पालन करते हैं, जो अल्प आहार लेते हैं तथा जो ईश्वर एवं विद्वज्जनों का सम्मान करते हैं, वे गणितीय आधार पर आकलित अथवा उससे भी अधिक आयु का आनन्द प्राप्त करते हैं।

जो लोग इसके विपरीत आचरण करते हैं उनका अन्त असामयिक होता है। इससे स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति की जीवन–अवधि उसके कुकर्मों के फलस्वरूप क्षीण हो सकती है।

किसी बालक का बारह वर्ष की आयु तक आयुनिर्णय नहीं किया जाना चाहिए। उसके जीवन के प्रथम चार वर्ष उसकी माता के पूर्व कर्मों के द्वारा नियंत्रित (प्रभावित) होते हैं, अग्रिम चार वर्ष उसके पिता के कर्मों के द्वारा और तृतीय चार वर्ष उसके अपने कर्मों के द्वारा। बारह वर्षों तक उसकी जन्मकुण्डली का फलादेश भी नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि जन्मकुण्डली जिस प्रकार के भविष्य का संकेत दे रही है उसमें इन अति प्रभावक घटकों के कारण परिवर्तन हो सकता है। इसलिए उक्त आयु तक हर शिशु की रक्षा ग्रहों की शान्ति, चिकित्सकीय सहायता तथा उचित देख–भाल के द्वारा की जानी चाहिए। उसका आयु निर्णय उसके इस आयु–सीमा के पार करने के बाद ही किया जाना चाहिए।

आयु निर्णय की गणना के लिए शुद्ध **जन्म विवरण** की आवश्यकता होती है जो इस प्रकार है–

- शुद्ध जन्म तिथि
- शुद्ध जन्म समय
- शुद्ध जन्म स्थान
- चित्रपक्षीय अयनांश के आधार पर परिशुद्ध जन्मकुण्डली

शुद्ध जन्म समय

शुद्ध जन्म समय के प्रति कुछ विवाद हैं। शुद्ध जन्म समय किसे माना जाना चाहिए ?

1. शिरोदय अथवा शरीर के किसी भाग का उदय ?
2. जब शिशु का भूशयन किया जाय ?
3. नाल कर्तन अथवा पृथक्करण ?
4. प्रथम रोदन

Future Point

- सामान्यतया नाभि–नाड़ी कर्तन अथवा प्रथम रोदन के समय को सही जन्म समय माना जा सकता है।
- अस्पताल के द्वारा उल्लिखित जन्म समय भी स्वीकार किया जा सकता है।

अन्त में मैं कहना चाहूँगी कि किसी जन्मकुण्डली का फलादेश जातक की जीवन–अवधि के मूल्यांकन के बाद ही किया जाना चाहिए। योग तथा जन्मकुण्डली में अन्तर्विष्ट सुन्दर आशाएं तभी फलवती हो सकेंगी जब जन्म कुण्डली में पर्याप्त आयु का संकेत हो।

आयुर्दाय में दक्षता प्राप्त करने के इच्छुक ज्योतिषियों को अपने इष्टदेव की पूजा तथा साधना सच्चे मन से करनी चाहिए। उनमें दूसरों की सहायता करने की निष्कपट भावना होनी चाहिए तथा उन्हें शान्त और स्वच्छ मन से आयु निर्णय करना चाहिए।

अभ्यास

प्र. 1. किसी जन्मकुण्डली के विश्लेषण के पूर्व आयु निर्णय का मूल्यांकन आवश्यक क्यों है ?

प्र. 2. कौन लोग गणितीय आधार पर संगणित आयु तक जीवित रहते हैं ?

प्र. 3. किन लोगों का अन्त असामयिक होता है ?

प्र. 4. जन्म काल से सम्बद्ध विवाद क्या है ? और किस जन्म समय को शुद्ध जन्म समय स्वीकार किया जा सकता है ?

□

Future Point

2. आयु खण्ड

''पूर्व कर्मफलं भोक्तुं जन्तोर्यदिह जीवनम।
आयुस्तत्कर्मशक्त्यास्य धीर्धमध्यात्मतादिकम।।''

–प्रश्न मार्ग

अपने पूर्व जन्मों के कर्मों का फल भोगने के लिए ही सभी प्राणी नया जन्म लेते हैं। उनके पूर्व कर्मों पर आधारित ही उनकी आयु दीर्घ – मध्य या अल्प होती है।

जन्मकुण्डली में योग जातक के पूर्व कर्मों का प्रतिपादन करते हैं और ये योग जातक के 'कर्म फलों' के साथ संबंध स्थापित करते है।

आयु निर्णय मूलतः दो प्रकार से किया जाता है।

1. **योगायु–जन्मकुण्डली में योगों द्वारा प्रदत्त**
2. **दशायु–जन्मकुण्डली में दशाओं द्वारा प्रदत्त**

योगायु

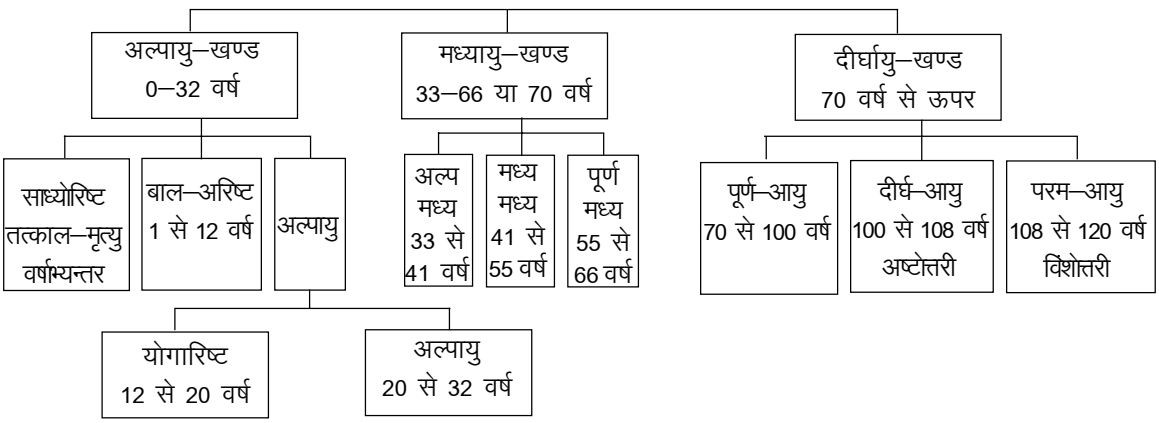

– कुछ ज्योतिषी 8 वर्ष तक की आयु को बालारिष्ट तथा 8 से 20 वर्ष तक की आयु को योगारिष्ट मानते हैं।

– अत्यंत दीर्घायु जातक या अत्यंत अल्पायु जातक की आयु की गणितीय संगणना आवश्यक नहीं है।

Future Point

आयु खण्ड का स्थूल निर्णय

I. जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति जातक के आयु खण्ड का कुछ संकेत प्रदान करती है।

पूर्ण आयु :

1. यदि निम्नलिखित भाव तथा ग्रह, बली हों और शुभ स्थिति में हों, तथा उनपर शुभदृष्टि हो, तो यह पूर्ण आयु का संकेत है।
   - लग्न और लग्नेश।
   - चन्द्र तथा चन्द्र राशि स्वामी।
   - अष्टम भाव तथा अष्टम भाव स्वामी
   - तृतीय भाव तथा तृतीय भाव स्वामी।
   - आयुष्कारक शनि।

2. - यदि शुभ ग्रह केन्द्रों तथा त्रिकोणों में स्थित हों।
   - अशुभ ग्रह उपचयों में स्थित हों।
   - अष्टम तथा द्वादशम भाव रिक्त हों और अशुभ ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हों।
   - लग्नेश अष्टम भाव के स्वामी से बली हो।

   यह भी पूर्णायु का एक संकेत है।

अल्प आयु :

अ. यदि तालिका (1) में उल्लिखित 5 घटक शक्ति विहीन हैं और अशुभ स्थिति में हों तो यह अल्पायु का द्योतक है।

ब. यदि शुभ ग्रह त्रिक भाव में और अशुभ ग्रह केन्द्रों तथा त्रिकोणों में स्थित हों, और लग्नेश अष्टम भाव स्वामी की अपेक्षा दुर्बल हो, तो भी अल्पायु की सम्भावना होती है। यदि चन्द्र भी त्रिक भावों से आक्रान्त हो तो यह सम्भावना और भी बढ़ जाती है।

II. - जब सभी अशुभ ग्रह, अष्टमेश सहित और लग्नेश से रहित, निम्नलिखित स्थिति में हो :
  अपोक्लिम– यह पूर्ण आयु का द्योतक है।
  पणफर– यह मध्य आयु का द्योतक है।
  केन्द्र– यह अल्प आयु का द्योतक है।

  - लग्नेश सहित जब सभी शुभ ग्रहों की स्थिति इस प्रकार हो :
  केन्द्र– यह पूर्ण आयु का द्योतक है।
  पणफर– यह मध्य आयु का द्योतक है।
  अपोक्लिम– यह अल्प आयु का द्योतक है।

Future Point

प्रश्न मार्ग विधि

सं.	4 स्थितियों पर विचार करें	अल्प–आयु	मध्य–आयु	पूर्ण–आयु
1.	• लग्न स्वामी • अष्टम भाव स्वामी	दोनों शत्रु	दोनों सम	दोनों मित्र
2.	• चन्द्र राशि स्वामी • चन्द्र से अष्टमेश	दोनों शत्रु	दोनों सम	दोनों मित्र
3.	• चन्द्र का नवांश स्वामी • चन्द्र से 64 वें नवांश का स्वामी	दोनों शत्रु	दोनों सम	दोनों मित्र
4.	• लग्नेश • सूर्य	दोनों शत्रु	दोनों सम	दोनों मित्र

''लग्न जन्मपयोः शत्रू निजाष्टमपती यदि।
समौ वा यदि वा बंधू स्वल्पमध्यचिरायुषः।।''

प्रश्नमार्ग

तदनुसार लग्नेश तथा अष्टमेश और चन्द्र तथा चन्द्र से अष्टमेश के परस्पर शत्रु, सम या मित्र होने से जीवन की अवधि अल्प, मध्यम या पूर्ण होगी।

''चन्द्रांशेशस्य तद्भूषा नवांशेशोथवा रवेः।
लग्नेशो वापि यद्येवं स्वल्पमध्यचिरायुषः।।'

प्रश्न मार्ग

यदि चन्द्र का नवांश स्वामी, तथा चन्द्र से 64वें नवांश का स्वामी परस्पर शत्रु, सम अथवा मित्र हो तो जातक की आयु अल्प, मध्य या पूर्ण होगी। सूर्य तथा लग्नेश की इसी प्रकार तुलना की जानी चाहिए।

प्रश्न मार्ग

डॉ. बी. वी. रमन

अभ्यास

प्र. 1. औसत मनुष्य की आयु कितने आयु खण्डों में विभाजित (वर्गीकृत) की जाती है और प्रत्येक आयु खण्ड की सीमा क्या है ?

प्र. 2. अल्प आयु का कितने आयु खण्डों में विभाजन किया जाता है? वर्णन करें।

प्र. 3. जातक के आयुखण्ड का स्थूल निर्णय कैसे कर सकते हैं ?

□

Future Point

3. मारकेश

मारक एक भयावह शब्द है। यह शब्द स्वयं भय तथा विषाद उत्पन्न करता है। किन्तु, मारक क्या है ? इसका अर्थ समझना आवश्यक है। मारक से मृत्यु का बोध होता है। अब मृत्यु क्या है ? गीता में श्री कृष्ण ने मृत्यु के 'आठ' प्रकार बताये हैं।

मृत्यु के आठ प्रकार :

1. व्यथा (निरन्तर क्लेश)
2. लगातार शत्रुओं से घिरा रहना
3. सदा दुःखों से ग्रस्त रहना
4. हर समय हर जगह लज्जित होना
5. अनवरत शोक से पीड़ित रहना (निकट संबंधियों की मृत्यु होना)
6. भरी सभा में अपमानित होना
7. हमेशा रोगग्रस्त रहना
8. शरीर से प्राण निकलना

मारक इनमें से किसी भी प्रकार की मृत्यु दे सकता है। इसलिए यदि मारक ग्रह की दशा आए तो इसका अर्थ सदा यह नहीं होता कि वास्तविक मृत्यु होगी, बल्कि इसका अर्थ यह है कि मृत्यु के इन आठों प्रकार से कोई एक प्रकार की मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। अन्ततः वास्तविक मृत्यु निश्चित है, किन्तु हर बार मारक दशा का अर्थ मृत्यु नहीं होता।

मृत्यु तो एक बार ही आएगी, जब, आयु निर्णय के मूल्यांकन के अनुसार, जातक अपने जीवन के अन्त को प्राप्त हो चुका हो और उसकी ईश्वर द्वारा प्रदत्त श्वासों की संख्या समाप्त हो चुकी हों।

मारक कौन है ?

मारक हन्ता है। किसी व्यक्ति के जीवन की समाप्ति पर वह हत्या कर देता है। किन्तु जीवन के शेष काल में मारक अस्वस्थता, रोग, दुर्घटनाएँ, बाधाएँ, रुकावटें तथा अन्य समस्याएँ (मृत्यु के आठ प्रकार) उत्पन्न करता है।

जन्मकुण्डली का द्वितीय भाव सर्वाधिक शक्तिशाली मारक भाव है। इसके बाद सप्तम भाव का स्थान है। तदनन्तर द्वादशम भाव आता है और तब क्रमशः अष्टम, तृतीय तथा दशम भाव का स्थान है। उनके स्वामी और उनसे सम्बद्ध ग्रह मारक होते हैं और भिन्न–भिन्न लग्नों के लिए स्वामित्व के अनुसार भिन्न–भिन्न मारक ग्रह होते हैं।

अष्टम भाव आयु स्थान है। सप्तम भाव अष्टम का द्वादश (व्यय) है, अर्थात् आयु का व्यय। अष्टम से अष्टम–तृतीय भाव भी आयु स्थान है। द्वितीय भाव भी तृतीय भाव से द्वादश है–आयु का व्यय।

Future Point

इसलिए द्वितीय भाव भी मारक स्थान हो जाता है। द्वितीय और तृतीय भाव के मारक स्थान होने का यही कारण है। दोनों में द्वितीय भाव अधिक शक्तिशाली मारक स्थान है।

मारक :

1. द्वितीय भाव स्वामी सर्वाधिक शक्तिशाली मारक है।
2. सप्तम भाव स्वामी या सप्तमेश।
3. द्वितीय भाव या द्वितीयेश से सम्बद्ध ग्रह।
4. सप्तम भाव अथवा सप्तम भाव स्वामी से सम्बद्ध ग्रह।
5. द्वादश भाव स्वामी।
6. द्वादश भाव अथवा द्वादश भाव स्वामी से सम्बद्ध ग्रह।
7. अष्टम भाव स्वामी और अष्टम भाव अथवा अष्टम भाव स्वामी से सम्बद्ध ग्रह।
8. तृतीय भाव स्वामी और तृतीय भाव या तृतीय भाव स्वामी से सम्बद्ध ग्रह।
9. दशमेश (कुछ विद्वानों के अनुसार तृतीय भाव से अष्टम)।
10. शनि 'आयुष्कारक' है—परम हन्ता या 'यम'। वह अप्रतिबन्धित मारक है। यदि वह अन्य मारकों में शामिल है तो वह अन्य सभी मारकों को हटा कर आगे बढ़ जाएगा और स्वयं मुखिया हो जाएगा। क्योंकि वह परम मारक है, वह कभी भी, किसी भी स्थिति में और कहीं भी क्रियाशील हो सकता है।

कुछ अन्य मारक

1. छिद्र ग्रह

जातक पारिजात में कुछ अशुभ ग्रहों को छिद्र ग्रहों की संज्ञा दी गयी है। इनमें जो कोई भी सर्वाधिक शक्तिशाली हो वह अपनी दशा में मृत्यु का वाहक हो सकता है।

छिद्र ग्रह सात हैं :

क. अष्टम भाव स्वामी।

ख. अष्टम भाव स्थित ग्रह।

ग. ग्रह जिनकी अष्टम भाव पर दृष्टि हो।

घ. खर द्रेष्काण स्वामी (22वाँ द्रेष्काण)।

च. अष्टम भाव के साथ संयुक्त ग्रह।

छ. चन्द्र से 64वें नवांश का स्वामी।

ज. अष्टम भाव स्वामी का अतिशत्रु।

जातक पारिजात में अष्टम भाव को बहुत महत्त्व दिया गया है। 22वाँ द्रेष्काण लग्न से अष्टम में पड़ता

Future Point

है। 64वां नवांश चन्द्र से अष्टम भाव में पड़ता है। और अन्य सभी छिद्र ग्रह अष्टम भाव से संबंधित हैं। अतः आयु के लिए अष्टम भाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

2. मृत्यु भाग में ग्रह

प्रत्येक राशि में प्रत्येक ग्रह तथा प्रत्येक लग्न के लिए, एक निश्चित अंश होता है, जो उसका मृत्यु भाग होता है। यदि ग्रह अपने मृत्यु भाग में स्थित हो तो वह प्रतिकूल हो जाता है। यदि कोई मारक मृत्यु भाग में स्थित हो तो वह मारक के रूप में और भी बली हो जाता है।

3. सूर्य तथा चन्द्र का मारकत्व :

सूर्य तथा चन्द्र की गणना मारकों में नहीं की जाती क्योंकि वे पृथ्वी को प्रकाशमान करते हैं। किन्तु, व्यवहार में वे भी मारक का कार्य कर सकते हैं, विशेष रूप से यदि वे अन्य मारकों या मारक भावों से सम्बद्ध हों।

4. लग्न स्वामी जो अष्टम भाव स्वामी भी है :

मंगल तथा शुक्र मेष और तुला लग्नों के लग्न स्वामी तथा अष्टम स्वामी हैं। लग्नेश होने के कारण वे दोष मुक्त होते हैं। वे सामान्यतया मारक नहीं होते। किन्तु यदि वे मारकों के साथ युक्त हों तो वे भी मारक हो सकते हैं।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि जन्मकुण्डली में सभी ग्रह मारक हो सकते हैं। उनमें जो ग्रह अधिक प्रमुख होगा, वह वास्तविक मारक होगा।

विभिन्न लग्नों के मारक

राशि सं.	राशि	मारक
1.	मेष	शनि, बुध, शुक्र
2.	वृष	गुरु, मंगल, शुक्र
3.	मिथुन	गुरु, मंगल, शनि
4.	कर्क	शनि, बुध, सूर्य
5.	सिंह	बुध, शनि
6.	कन्या	मंगल, शुक्र, गुरु
7.	तुला	मंगल, शुक्र, गुरु, सूर्य
8.	वृश्चिक	बुध, शुक्र
9.	धनु	शनि, बुध, चन्द्र
10.	मकर	गुरु, सूर्य, चन्द्र
11.	कुम्भ	गुरु तथा बुध
12.	मीन	शुक्र, शनि, बुध

Future Point

1. ये सभी ग्रह अपने स्वामित्व के आधार पर अधिक या न्यून मारकत्व प्राप्त करते हैं।
2. लग्नेश, सूर्य या चन्द्र जब कभी मारकत्व प्राप्त करते हैं तो एक बड़ी सीमा तक उनका दोष निष्प्रभाव हो जाता है, किन्तु यदि उनका किसी मारक ग्रह या भाव से दोबारा संयोग हो तो वे भी मारक के समान कार्य कर सकते हैं।

अभ्यास

प्र. 1. मृत्यु के आठ प्रकार कौन–कौन से हैं ?

प्र. 2. मारक कौन है और वह क्या कर सकता है ?

प्र. 3. कौन से ग्रह मारक हो सकते हैं ?

प्र. 4. मारकत्व सन्दर्भ में द्वितीय तथा सप्तम भावों का क्या महत्त्व है ?

प्र. 5. विभिन्न लग्नों के मारक ग्रह कौन–कौन हैं ?

प्र. 6. अन्तिम मृत्यु कब होगी ?

Future Point

4. बालारिष्ट

बालारिष्ट का अर्थ है, बालक की बारह वर्ष की आयु के पूर्व कुछ गम्भीर कष्ट। यह कष्ट किसी गम्भीर बीमारी, माता अथवा पिता की मृत्यु, शिशु की मृत्यु अथवा शिशु पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले किसी आपदा के फलस्वरूप उत्पन्न हो सकता है। हमने पूर्व में ही इस पर विचार किया है कि छोटे बच्चे की जन्मकुण्डली का फलादेश क्यों नहीं करना चाहिए। हमारा ध्यान विशेष रूप से उपस्थित बालारिष्ट योगों पर केन्द्रित होना चाहिए, ताकि अरिष्ट को दूर करने तथा शिशु की रक्षा के लिए ज्योतिषीय उपाय का परामर्श दिया किया जा सके।

बालारिष्ट निर्णय के मुख्य सिद्धान्त :

1. चन्द्र स्थिति :

बाल्यावस्था में चन्द्र का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चन्द्र माता का द्योतक भी है। इसलिए चन्द्र पर पीड़ा शिशु अथवा माता के लिए अरिष्ट उत्पन्न करती है।

2. लग्न और लग्न स्वामी :

लग्न का महत्त्व अविवादास्पद है। यदि लग्न और लग्नस्वामी बली हों तो वे विपत्ति का सामना कर सकते हैं, किन्तु, यदि वे निर्बल हैं तो उसके वशीभूत हो जाते हैं।

3. अष्टम भाव तथा अष्टम स्वामी :

अष्टम भाव आयु अथवा मृत्यु का भाव है; इसलिए शुभ ग्रहों की दृष्टि इसकी रक्षा करती है। अष्टम भाव पर अशुभ ग्रहों के प्रभाव से आयु क्षीण होती है, किन्तु अष्टम भाव में स्थित शनि, यदि वक्री न हो, तो आयु में वृद्धि करता है।

4. केन्द्रों में स्थित मार्गी शुभग्रह शिशु की रक्षा करते हैं, जबकि केन्द्रों में अशुभग्रह कष्ट प्रदान करते हैं। वक्री शुभग्रह शिशु की रक्षा नहीं कर सकते, जबकि वक्री अशुभ ग्रह और भी हानिकारक होते हैं।

5. दशा तथा गोचर :

प्रतिकूल दशा तथा गोचर भी अरिष्टकारक होते हैं।

अरिष्ट के अधिकांश शास्त्रीय योग उपरिकथित पाँच सिद्धान्तों पर आधारित हैं। शास्त्रों में अरिष्ट के अनेक योगों का उल्लेख है, जिनमें महत्त्वपूर्ण योगों का मैं यहाँ वर्णन करूंगी।

बालारिष्ट के प्रमुख शास्त्रीय योग :

1. यदि चन्द्र, लग्न से षष्ठम, अष्टम अथवा द्वादशम भाव में स्थित हो और उस पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि या प्रभाव हो, तो अरिष्ट उत्पन्न होता है।
2. यदि अशुभ ग्रह चन्द्र के साथ स्थित हों अथवा चन्द्र से केन्द्र में हों तो यह भी शिशु के लिए कष्टकारक होता है।

Future Point

3. यदि चन्द्र पापकर्तरी में, लग्न में हो, और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तथा सप्तम और अष्टम भावों में अशुभ ग्रह स्थित हों, तो शिशु व माता की मृत्यु होती है। यह एक अत्यन्त शक्तिशाली और भयानक योग है तथा इससे रक्षा के लिए शीघ्र प्रबल उपाय किए जाने चाहिए।

4. यदि जन्म लग्न निगड़ द्रेष्काण (1°-10° मकर) अथवा पक्षी द्रेष्काण (11°-20° मिथुन) अथवा सर्प द्रेष्काण (21°-30° मकर) में हो, और यदि शुभ ग्रहों से किसी प्रकार से संबंधित न हो, तथा अशुभ ग्रहों से संबंधित हो, तो बालारिष्ट होता है।

बृहत् जातक के अनुसार :

- **सर्प द्रेष्काण इस प्रकार है :** कर्क का द्वितीय और तृतीय, वृश्चिक का प्रथम और द्वितीय तथा मीन का तृतीय।
- **पक्षी द्रेष्काण इस प्रकार है :** मिथुन का द्वितीय, सिंह का प्रथम, तुला का द्वितीय और कुम्भ का प्रथम।

5. **वज्र मुष्टि योग :**

यदि कर्क अथवा वृश्चिक राशि लग्न में हो तथा सभी अशुभ ग्रह पूर्वार्द्ध (दशम से चतुर्थ भाव) में हों और सभी शुभ ग्रह पश्चिमार्द्ध (चतुर्थ से दशम भाव) में स्थित हों तो शिशु की आयु अल्प होती है।

6. यदि वक्री शनि, मंगल की राशि में, अष्टम भाव में स्थित हो और उस पर बली मंगल की दृष्टि हो तो शिशु की आयु दो वर्ष की होती है।

7. यदि जन्म सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय हुआ हो, जब सूर्य तथा चन्द्र राहु या केतु के समीप हों, और लग्न पर शनि तथा मंगल की दृष्टि हो, तो शिशु की मृत्यु 15 दिनों के अन्दर हो जाती है।

8. यदि शनि, मंगल तथा सूर्य षष्ठम या अष्टम भाव में स्थित हों तो शिशु की मृत्यु एक माह के अन्दर हो जाती है, स्वयं यम भी उसकी रक्षा नहीं कर सकता (अक्षरशः नहीं लिया जाय)। इसका तात्पर्य गम्भीर बीमारी से भी है।

9. यदि जन्म सूर्योदय अथवा सूर्यास्त (सांध्य–प्रकाश) के समय, चन्द्र होरा में या गण्डान्त (मीन–मेष, कर्क–सिंह तथा वृश्चिक–धनु के मिलन बिन्दु) में हो, और चन्द्र तथा अशुभ ग्रह केन्द्रों में स्थित हों, तो शिशु की मृत्यु हो जाती है।

10. यदि जन्म ग्रहण के समय हो, तथा चन्द्र लग्न में अशुभ ग्रहों से युत हो, तथा मंगल अष्टम भाव में हो तो किसी अस्त्र–शस्त्र के कारण (ऑपरेशन) शिशु तथा माता की मृत्यु हो जाती है।

माता को अरिष्ट :

1. चन्द्र पर तीन अशुभ ग्रहों की दृष्टि के फलस्वरूप माता की मृत्यु हो सकती है, किन्तु, यदि चन्द्र पर शुभ ग्रहों की भी दृष्टि हो तो इससे उसकी रक्षा होती है।
2. यदि अशुभ ग्रह निर्बल चन्द्र से पंचम अथवा नवम भाव में हों तो शिशु के जन्म से छः महीने के अन्दर शिशु की मृत्यु हो जाती है।
3. दशम भाव में शनि, षष्ठम भाव में चन्द्र तथा सप्तम भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप माता तथा शिशु की मृत्यु हो जाती है।

Future Point

पिता को अरिष्ट :

1. यदि सूर्य पाप कर्तरी में अथवा अशुभग्रहों से युक्त हो, और अशुभ ग्रह सूर्य से सप्तम भाव में स्थित हों तो पिता की मृत्यु होती है।
2. सूर्य मंगल के नवांश में हो और मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो शिशु के जन्म से पूर्व पिता की मृत्यु हो जाती है अथवा वह अपने परिवार का त्याग करता है।
3. शनि लग्न में, मंगल सप्तम भाव में तथा तथा चन्द्र षष्ठम भाव में हो तो पिता की मृत्यु हो जाती है।

शास्त्रों में प्रयुक्त भाषा अत्यन्त कठोर है। यथार्थ में हो सकता है कि स्थिति इतनी अशुभ न हो। मृत्यु का तात्पर्य अस्वस्थता अथवा माता–पिता से पृथकता भी हो सकता है।

विशेष (आवश्यक) :

- अरिष्ट का विवेचन करते समय अरिष्ट भंग पर भी विचार किया जाना चाहिए। यदि अरिष्ट भंग विद्यमान हो तो अरिष्ट क्षीण हो सकता है या उसका निवारण किया जा सकता है।

वर्ग कुंडली :

- शिशु की जन्मकुण्डली में अरिष्ट पर विचार करते समय, नवांश, द्रेक्काण, द्वादशांश तथा त्रिंशांश की जाँच अवश्य की जानी चाहिए। यदि वर्गों में सुधार हो तो अरिष्ट क्षीण होता हैं, किन्तु, वर्गों में अरिष्ट की पुनरावृत्ति गम्भीर चिन्ता का विषय है और शिशु की रक्षा के लिए व्रत, दान, जप अथवा हवन आदि उपाय शीघ्र कराने की सलाह देना चाहिये।

अरिष्ट कब होगा ?

- यदि दशा–अन्तरदशा तथा गोचर के अनुसार लग्न, लग्नस्वामी अथवा चन्द्र निर्बल हो जाते हैं, तब अरिष्ट होता है। अरिष्ट, अधिकतर षष्ट, अष्टम या द्वादश भाव के स्वामियों की दशा में होता है या अशुभ ग्रहों की दशाओं में होता है।
- यदि लग्न अथवा चन्द्र दशा और गोचर में निर्बल न हो तो अरिष्ट नहीं होगा। जैसे यदि किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य पहले से ही कमजोर हो तो उसे रोग जल्दी हो जाएगा। शेष समय व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

अरिष्ट होगा या नहीं ?

– इसका निर्धारण करने के लिए अरिष्ट तथा अरिष्ट भंग दोनों पर विचार किया जाना चाहिए।

– यदि नवांश में स्थिति में सुधार हो तो अरिष्ट शायद न हो।

– यदि अरिष्ट भंग बली हो तथा जातक का दशाक्रम अनुकूल हो तो अरिष्ट शायद न हो।

– यदि अरिष्ट अति बली हो और अरिष्ट भंग निर्बल हो तथा दशाक्रम और गोचर प्रतिकूल हों तो अरिष्ट अवश्यम्भावी है। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को जातक को सम्भाव्य घटना का सामना करने की शक्ति देने का प्रयत्न करना चाहिये।

Future Point

बालारिष्ट : जन्म तिथि– 23.9.2002

जन्म समय– 3.37 दोपहर

जन्म स्थान– दिल्ली

लग्न

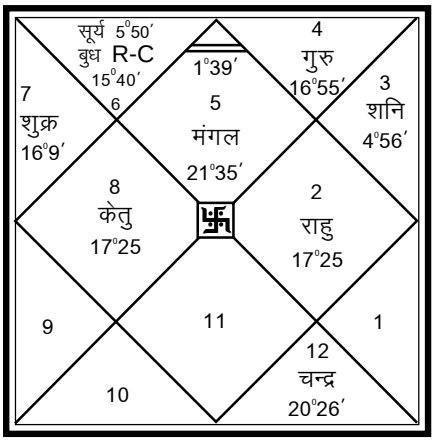

नवांश

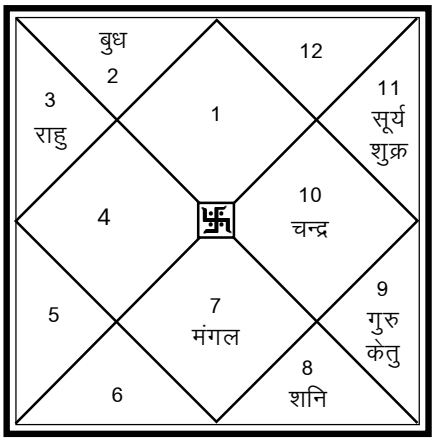

जन्म दशा बुध–शुक्र–राहु–चन्द्र, 27.9.2002 तक

शिशु का जन्म अष्टम माह में समय से पहले हुआ, उसकी मृत्यु 25.9.2002 को हो गयी।

1. बालारिष्ट विचार में चन्द्र की स्थिति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस कुंडली में चन्द्र अष्टम भाव में बुरी तरह से पीड़ित है। यह बालारिष्ट का शास्त्रीय योग है।
   - चन्द्र स्वयं द्वादश भाव का स्वामी है।
   - वह सर्प द्रेष्काण में है।
   - वह केमद्रुम योग में है।
   - डी–1 में वह शनि, मंगल, केतु, सूर्य तथा बुध से दृष्ट है।
   - वह नवांश में शनि तथा मंगल द्वारा पुनः पीड़ित है।
   - वह गण्डमूल नक्षत्र (रेवती) में है।
   - कण्टक शनि क्रियाशील है।
2. लग्न गण्डान्त के बहुत समीप मघा नक्षत्र में है।
3. जन्म के समय सक्रिय विंशोत्तरी दशा थी :

बुध–शुक्र–राहु–चन्द्र

- महादशा नाथ बुध – बुध द्वितीय तथा एकादशम भावों का स्वामी है, इसलिए सिंह लग्न के लिए उसमें मारकत्व है। साथ ही यह मारक भाव (द्वितीय भाव) में स्थित है।
- अंतरदशा नाथ शुक्र : डी–1 में शुक्र त्रितियेश तथा सप्तमेश है। डी–1 में शुक्र चन्द्र से अष्टम भाव में स्थित है तथा डी–9 में वह चन्द्र से द्वितीय भाव में स्थित है। इस प्रकार शुक्र में भी मारकत्व है।

Future Point

- प्रत्यंतर दशा नाथ राहु : राहु शुक्र की राशि में बैठा है। इसलिए वह शुक्र के समान प्रभाव डाल रहा है। राहु–शुक्र दशा भी एक जटिल दशा है और ऐसे कष्ट उत्पन्न करने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त राहु तथा शुक्र एक दूसरे से 6/8 अक्ष (षडाष्टक) में हैं। इसलिए प्रत्यन्तर दशा भी प्रतिकूल है।
- सूक्ष्म दशा नाथ चन्द्र :
- पीड़ित चन्द्र स्वयं सूक्ष्म दशा स्वामी है।

– इस तरह हम देखते हैं कि योग तथा दशा दोनों प्रतिकूल हैं।
– किन्तु, जन्मकुण्डली में कुछ **रक्षक तत्त्व** हैं।
– योगकारक मंगल डी–1 में लग्न में पुष्कर अंश (जीवनदायी अंश) में है। डी–9 में वह लग्न स्वामी हो जाता है जिसकी लग्न पर दृष्टि है।
– डी–1 में चन्द्र तथा अष्टम भाव पर उच्च के गुरु की दृष्टि है। डी–9 में लग्न पर गुरु की दृष्टि है।
– चन्द्र पक्षबल में बली है।

इसके बावजूद शिशु को बचाया नहीं जा सका। स्वयं रक्षक तत्त्व की अपनी दुर्बलताएँ थीं।

– गुरु अष्टम भाव का स्वामी तथा बाईसवें द्रेष्काण का स्वामी है तथा पापकर्तरी में है। अतः गुरु का बचाव दूषित है।
– मंगल चौंसठवें नवांश का स्वामी है।
– यह इस अशुभ घटना का ज्योतिषीय विवेचन है। इसके ऊपर शिशु के पूर्व कर्म सक्रिय हैं।

केवलम् ग्रह नक्षत्रं न करोति शुभाशुभम्।
सर्वमात्मकृतं कर्म लोकवादो ग्रहा इति।

– महाभारत

महाभारत में कहा गया है कि केवल ग्रह और नक्षत्र ही शुभ तथा अशुभ फल नहीं देते। फल व्यक्ति के कर्मों का परिणाम है। कहते हैं कि यह ग्रहों का कार्य है। ग्रहों से हमें शुभ–अशुभ फलों का संकेत मिलता है।

हिन्दू ज्योतिष में कर्म और पुनर्जन्म
के. एन. राव

अभ्यास

प्र. 1. बालारिष्ट का क्या अर्थ है ?
प्र. 2. शिशु के कल्याण के महत्त्वपूर्ण तत्त्व क्या हैं ?
प्र. 3. बालारिष्ट के मुख्य संस्थापित योगों का वर्णन करें।
प्र. 4. यदि जन्मकुण्डली में बालारिष्ट विद्यमान हो तो इसकी पुष्टि कैसे की जा सकती है ?
प्र. 5. अरिष्ट होगा या नहीं इसका निर्धारण कैसे करेंगे ?

□

Future Point

5. अरिष्टभंग

(अरिष्ट का शमन)

Future Point

शिशु अथवा किसी वृद्ध जातक के लिए अरिष्ट एक गम्भीर कष्ट है। अरिष्टभंग का अर्थ है अरिष्ट का शमन। यह सुरक्षा प्रदान करता है और इसके फलस्वरूप जातक के जीवन में अपेक्षित सुधार होता है। बली शुभ ग्रहों का संबंध शिशु की रक्षा करता है।

1. लग्न, लग्नेश, चंद्र तथा चंद्र के राशीश अथवा केंद्रों पर शुभ ग्रहों के प्रभाव से बालारिष्ट भंग होता है।
2. यदि बली तथा ओजस्वी गुरु (उच्च अथवा स्वराशि का) कर्क, धनु अथवा मीन राशि में लग्न में स्थित हो तो अरिष्ट से शिशु की रक्षा करता है। ऐसी स्थिति में गुरु लाख दोषों का नाश कर सकता है। इसी स्थिति में शुक्र दस हजार दोषों का जबकि बुध एक हजार दोषों का शमन करता है।
3. केन्द्रों में स्थित बली लग्नेश शिशु की रक्षा तथा सहायता करता है और आयु में वृद्धि करता है।
4. केन्द्र में स्थित बली लग्नेश पर यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और अशुभ ग्रहों का संबंध न हो तो वह पीड़ा का नाश और आयु में वृद्धि करता है।
5. यदि चन्द्र षष्ठम, अष्टम अथवा द्वादशम भाव में स्थित हो और उस पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा यदि जन्म शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) अथवा कृष्ण पक्ष में दिन के समय (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) हुआ हो तो यह चन्द्र मारने की बजाय माँ भगवती की तरह शिशु की रक्षा करता है। (एक अति बली अरिष्ट भंग योग)।
6. तृतीय, षष्ठम तथा एकादशम भाव में स्थित राहु पर यदि शुभ दृष्टि हो तो वह पीड़ा का तत्काल नाश करता है। यदि मेष, वृष अथवा कर्क लग्न में राहु स्थित हो तो इस स्थिति में भी पीड़ा का शमन होता है।
7. यदि सूर्य तुला लग्न के लिए द्वादशम भाव में स्थित हो तो जातक शतायु होता है। (एक अति बली योग) 100 वर्षों का अर्थ है दीर्घायु अर्थात् पूर्ण आयु।
8. यदि चन्द्र षष्ठम अथवा अष्टम भाव में स्थित हो किन्तु, शुभग्रहों के द्रेष्काण में हो तो अरिष्ट का नाश करता है।
9. पूर्ण चन्द्र पर यदि सभी ग्रहों की दृष्टि हो तो वह भी अरिष्ट का नाश करता है।
10. शुभग्रह लग्न अथवा चन्द्र से षष्ठम, सप्तम तथा अष्टम भावों में स्थित हों और अशुभ ग्रहों से उनका कोई योग न हो तो अरिष्ट से रक्षा करते हैं। (चन्द्र या लग्न अधियोग)।
11. केन्द स्थित गुरु तथा शुक्र अरिष्ट का नाश करते हैं।

12. यदि लग्न और शुभ ग्रह बली तथा अशुभ ग्रह निर्बल हों तो शिशु की संकट से रक्षा होती है।

13. यदि पूर्ण चन्द्र पर शुक्र की दृष्टि हो और शुक्र मित्र नवांश में हो तो इससे अनिष्ट का नाश होता है।

14. यदि जन्मकुण्डली में बली शुभ राजयोग हों, तो इस स्थिति में भी आयु में वृद्धि होती है।

चन्द्र तथा लग्नेश दो मुख्य तत्त्व हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए। यदि उन पर प्रबल अशुभ प्रभाव हो तो अरिष्ट की उत्पत्ति होती है। यदि शुभग्रहों की दृष्टि अथवा शुभ प्रभाव भी हो तो अरिष्ट क्षीण होता है या उसका नाश हो जाता है।

स्मरण रहे कि जब कोई शुभ दृष्टि रक्षक का कार्य करे तो वह निश्चित रूप से किसी शुभ भाव से प्रस्फुटित होनी चाहिये। यदि कोई शुभग्रह अष्टम भाव में स्थित हो और वहाँ दृष्टि डाल रहा है, तो वह दृष्टि पर्याप्त सुरक्षा नहीं देगी।

यदि अरिष्टभंग हो तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि अरिष्ट नहीं आएगा। इसका अर्थ है कि अरिष्ट आएगा किन्तु, शिशु की इससे रक्षा हो जाएगी। यदि पीड़ा अत्यधिक हो और शमन बहुत प्रभावी न हो तो शिशु की मृत्यु हो सकती है। किन्तु, यदि पीड़ा मध्यम हो तथा बचाव प्रभावशाली हो तो सब कुशल रहेगा।

उपाय तथा पूजा–पाठ चमत्कारी होते हैं और अरिष्ट भंग के असफल होने की स्थिति में शिशु की रक्षा कर सकते हैं।

अभ्यास

प्र. 1. अरिष्टभंग का अर्थ क्या है ?

प्र. 2. अरिष्टभंग का परिणाम क्या हो सकता है ?

प्र. 3. अरिष्टभंग के महत्त्वपूर्ण योगों का वर्णन करें।

Future Point

6. गण्डान्त जन्म

मीन–मेष, कर्क–सिंह तथा वृश्चिक–धनु राशियों की संधियों को गण्डान्त कहा जाता है। यदि शिशु का जन्म चन्द्र गण्डान्त में हो, तो यह या तो उसके स्वयं के लिए, या फिर उसके परिवार के सदस्यों के लिए प्रतिकूल होता है।

इस श्रेणी में छः नक्षत्र आते हैं और इन्हें ''गण्डमूल'' नक्षत्र या केवल ''मूल'' नक्षत्र कहा जाता है।

यह छः नक्षत्र ज्ञान कारक बुध तथा मोक्षकारक केतु के हैं। ज्ञान तथा मोक्ष का संगम आत्मा को मोक्ष की ओर ले जा सकता है, जो आत्मा के लिए सुखदायी, किन्तु मनुष्यों के लिए दुख का कारण बन जाता है। इसीलिए कहते हैं कि गंडांत में जन्मा बालक मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। परन्तु यदि बच जाए तो अत्यंत ज्ञानी निकलता है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो राशी, या नक्षत्र संधि अशुभ होती है। गंडमूल नक्षत्र राशियों तथा नक्षत्रों की संधियां है। अतः दोहरी संधियां हैं। इसलिए वे और भी अशुभ हैं। यह नक्षत्र निम्नलिखित है :

1. रेवती
2. अश्विनी
3. अश्लेशा
4. मघा
5. ज्येष्ठा
6. मूल

यदि किसी शिशु का चन्द्र 'गण्डान्त' में स्थित हो, तो जन्म के 27 दिनों के बाद, जब चन्द्र का उस नक्षत्र में पुनर्प्रवेश होता है, तो 'बृहत् पराशर होराशास्त्र' में उल्लिखित शास्त्रीय विधि के अनुसार 'मूल शान्ति' अवश्य करा लेनी चाहिए। इससे दोष के शमन में सहायता मिलती है और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति तथा आयु में वृद्धि होती है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है–रेवती-अश्विनी, आश्लेषा–मघा तथा ज्येष्ठा–मूला नक्षत्रों के सन्धि–बिन्दुओं की पहले नक्षत्र की अन्तिम दो घटियों तथा दूसरे नक्षत्र की दो घटियों के द्वारा द्योतित चार घटियाँ नक्षत्र गण्डान्त हैं।

1. **रेवती**– अन्तिम 2 घटियाँ तथा अश्विनी–प्रथम 2 घटियाँ गण्डान्त है।
2. **आश्लेषा**– अन्तिम 2 घटियाँ तथा मघा–प्रथम 2 घटियाँ गण्डान्त है।
3. **ज्येष्ठा**– अन्तिम 2 घटियाँ तथा मूल–प्रथम 2 घटियाँ गण्डान्त है।

इन सन्धि–बिन्दुओं के अन्तिम तथा प्रथम अंश वास्तविक गण्ड के सर्वाधिक निर्णायक अंश है।

गण्डान्त जन्म का फल

गण्डान्त में किसी शिशु का जन्म उसके स्वयं अथवा उसके परिवार के लिए प्रतिकूल (अशुभ) है।

Future Point

- **अश्विनी में चन्द्र का फल**
  - प्रथम पद में – पिता के लिए कष्टदायक।
  - द्वितीय पद में – आराभ तथा सुख के लिए उत्तम।
  - तृतीय पद में – उच्च पद
  - चतुर्थ पद में – राज सम्मान
  - प्रथम पद को छोड़ शेष सभी पद शुभ हैं।
- **आश्लेषा में चन्द्र का फल**
  - प्रथम पद – यदि शान्ति करायी जाय तो सब शुभ होगा।
  - द्वितीय पद – सम्पत्ति के लिए अशुभ।
  - तृतीय पद – माता के लिए अशुभ।
  - चतुर्थ पद – पिता के लिए अशुभ।
- **मघा में चन्द्र का फल**
  - प्रथम पद – माता के लिए अशुभ
  - द्वितीय पद – पिता के लिए अशुभ।
  - तृतीय पद – उत्तम
  - चतुर्थ पद – सम्पत्ति तथा शिक्षा के लिए उत्तम।
- **ज्येष्ठा में चन्द्र का फल**
  - प्रथम पद – बड़े भाई के लिए अशुभ
  - द्वितीय पद – छोटे भाई के लिए अशुभ
  - तृतीय पद – माता के लिए अशुभ
  - चतुर्थ पद – स्वयं के लिए अशुभ।
- **अन्य विचार**

  ज्येष्ठा 13°20′ को 10 भागों में विभाजित करें। यदि जन्म :
  - प्रथम भाग में हो– नानी के लिए अशुभ (कुछ लेखकों का विचार हैं कि प्रथम भाग नाना के लिए और द्वितीय भाग नानी के लिए अशुभ होता है)।
  - द्वितीय भाग में हो – नाना के लिए अशुभ।
  - तृतीय भाग में हो – मामा के लिए अशुभ।
  - चतुर्थ भाग में हो – माता के लिए अशुभ।
  - पंचम भाग में हो – स्वयं के लिए अशुभ।
  - षष्ठम भाग में हो – परिवार के लिए अशुभ।
  - सप्तम भाग में हो – माता–पिता के संबंधियों के लिए अशुभ।
  - अष्टम भाग में हो – बड़े भाई के लिए अशुभ।

Future Point

– नवम भाग में हो – ससुर के लिए अशुभ।
– दशम भाग में हो – सभी के लिए अशुभ
– टिप्पणी :–
– ज्येष्ठा निकृष्टतम गण्डान्तों में से एक है।

- **मूल में चन्द्र का फल**
  – प्रथम पद – पिता के जीवन को प्रभावित करता है।
  – द्वितीय पद – माता के लिए अशुभ।
  – तृतीय पद – सम्पत्ति की हानि।
  – चतुर्थ पद – शिशु स्वस्थ, सम्पत्तिशाली, प्रसन्न तथा वाक्पटु होगा और उसे सरकार का अनुग्रह प्राप्त होगा, किन्तु वह परिवार में कष्ट का स्रोत होगा। यदि शान्ति के उपाय किए जाएँ तो अच्छे फल मिलेंगे।

अभुक्तमूल :

ज्येष्ठा की अन्तिम एक घटी तथा मूल की प्रथम एक घटी अत्यन्त हानिकर हैं। इन्हें अमुक्तमूल कहा जाता है। शास्त्रों में पिता को शिशु से 8 वर्षों तक अलग रहने का निर्देश है। यदि यह सम्भव न हो तो कम से कम छः महीने तक दूर रहना चाहिए और शिशु को शान्ति के उचित उपाय पश्चात ही देखना चाहिए। अभुक्तमूल पिता के लिए अत्यन्त हानिकर है। मैंने कुछ कुण्डलियों में स्वयं यह अनुभव किया है।

- **रेवती में चन्द्र का फल :**

रेवती के प्रथम तीन पद दुष्प्रभाव से मुक्त हैं, किन्तु अन्तिम पद शिशु के लिए अशुभ है।

नक्षत्र गण्डान्त के अतिरिक्त राशि तथा तिथि गण्डान्त भी हैं। राशि गण्डान्त शिशु के परिवार को तथा तिथि गण्डान्त शिशु के माता–पिता को प्रभावित करता है।

शिशु के जन्म के समय ज्योतिषी को यह देखना चाहिए कि यह गण्डान्त जन्म तो नहीं है। यदि गण्डान्त जन्म है, तो उसे जन्म नक्षत्र के अनुसार तुरंत मूल शान्ति की सलाह देनी चाहिए। विभिन्न शान्तियों के लिए पराशर–ऋषि के बृहत् पराशर होराशास्त्र की सहायता लेनी चाहिए।

अभ्यास

प्र. 1. गण्डान्त जन्म का क्या अर्थ है ?
प्र. 2. गण्डमूल नक्षत्र कौन–कौन से हैं ?
प्र. 3. निम्नलिखित नक्षत्रों में चन्द्र का क्या फल होता है–
1. ज्येष्ठा 2. मूल 3. आश्लेषा
प्र. 4. यदि शिशु का चन्द्र गण्डमूल नक्षत्र में हो तो क्या किया जाना चाहिए ?

□

Future Point

7. आयु निर्णय

Future Point

पराशर ऋषि के अनुसार आयु–गणना की लगभग 82 विधियाँ हैं।

किसी जन्मकुण्डली विशेष के लिए किस विधि का उपयोग किया जाना चाहिए इसका निर्णय ग्रहबल तथा भावबल के द्वारा किया जाता है। (राहु तथा केतु पर विचार नहीं किया जाता)।

आयु–गणना की विभिन्न विधियाँ :

अंशायु – अंशायु का उपयोग लग्न के बली होने पर किया जाता है।

पिण्डायु – जब सूर्य बली हो तो पिण्डायु का उपयोग किया जाता है।

निसर्गायु – जब चन्द्र बली हो तो निसर्गायु का उपयोग किया जाता है।

भिन्नाष्टक वर्ग आयु– जब मंगल बली हो तो भिन्नाष्टक वर्ग आयु का उपयोग किया जाता है।

रश्मि आयुर्दाय – जब बुध बली हो तो रश्मि आयुर्दाय का उपयोग किया जाता है।

नक्षत्र आयु – जब गुरु बली हो तो नक्षत्र आयु का उपयोग किया जाता है।

कालचक्र आयुर्दाय – जब शुक्र बली हो तो कालचक्र आयुर्दाय का उपयोग किया जाता है।

सर्वाष्टक वर्ग आयु – जब शनि बली हो तो सर्वाष्टक वर्ग आयु का उपयोग किया जाएगा।

जैमिनी आयुर्दाय – आयु खण्ड के निर्णय के लिए जैमिनी आयुर्दाय सर्वाधिक प्रचलित विधि है।

आयु निर्णय की कुछ अन्य अनुरूप विधियाँ

1. **वारायु :**

   मानसागरी में जन्म के साप्ताहिक दिन के अनुसार स्थूल आयु निर्णय का उल्लेख है, यद्यपि यह बहुत सटीक नहीं है।

2. **राश्यायु :**

   मानसागरी में जन्म राशि के अनुसार भी स्थूल आयु निर्णय का उल्लेख है–यह विधि भी सटीक नहीं है।

3. **केन्द्रायु :**

   केन्द्रों में राशियों के अंकों का योग कर उसका 3 से गुणा किया जाता है। उसके बाद जिस केन्द्र में मंगल, शनि या राहु स्थित हो उस राशि के अंकों को गुणनफल से घटा लिया जाता है। जो शेष बचता है वह आयु का द्योतक होता है।

4. **पुरुषाकार ग्रह चक्र :**

   मानव की आकृति के निर्माण के बाद, उसके मस्तिष्क में, जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित होता है, उसे

लिख दिया जाता है। अन्य नक्षत्र चक्र के अनुसार स्थापित किया जाता है। शरीर के जिस भाग में जन्म नक्षत्र होता है वह आयु दिखाता है।

5. ग्रह स्पष्टों के अनुसार आयु :

सूर्य, चन्द्र, गुरु तथा शनि के रेखांशों को जोड़कर उनका योग रेखांश के रुप में प्राप्त किया जाता है। जब गोचर में शनि का उस रेखांश पर संक्रमण होता है तो मृत्यु की सम्भावना होती है—यदि जातक अपने आयु निर्णय के अनुसार अपनी आयु को प्राप्त कर चुका हो और यदि उपयुक्त दशा क्रियाशील हो। ऐसी स्थिति में संभावना है कि मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट हो।

अभ्यास

प्र. 1. आयु निर्णय की निम्नलिखित विधियों का अनुसरण कब किया जाना चाहिए ?
पिण्डायु, अंशायु, जैमिनी आयुर्दाय।

प्र. 2. आयु निर्णय के लिए हमें क्या केवल एक विधि पर निर्भर करना चाहिए ?

□ □ □

Future Point

8. जैमिनी आयुर्दाय

यह आयु के मूल्यांकन की सर्वाधिक लोकप्रिय विधि है। यह जातक के आयुखण्ड का 80 प्रतिशत तक परिशुद्ध हल निकालने में हमारी सहायता करती है।

जातक की जन्म–अवधि 100 वर्ष मानी जाती है। यदि 100 वर्षों का तीन खण्डों में विभाजन किया जाय तो प्रत्येक खण्ड 33 वर्षों का होगा।

अल्प–आयु – 0 से 33 वर्ष

मध्य–आयु – 33 से 66 वर्ष

पूर्ण–आयु – 66 से 100 वर्ष

जातक के आयुखण्ड के निर्णय के लिये इन तीनों सेटों पर विचार किया जाता है।

प्रथम सेट

लग्नेश (लग्न स्वामी)

अष्टमेश (अष्टम भाव स्वामी)

द्वितीय सेट

लग्न

चन्द्र

तृतीय सेट

लग्न

होरा लग्न

देखें कि ये किस प्रकार की राशियों में स्थित हैं–चर, स्थिर या द्विस्वभाव।

- चर राशियाँ–मेष–कर्क–तुला–मकर
- स्थिर राशियाँ–वृष–सिंह–वृश्चिक–कुम्भ
- द्विस्वभाव राशियाँ–मिथुन–कन्या–धनु–मीन
- **अल्प–आयु**
- यदि तीनों सेट पूर्ण रुप से स्थिर राशियों में हों तो अल्प–आयु की सम्भावना होती है।

अथवा

- यदि प्रत्येक सेट का एक भाग चर राशि में तथा दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो इस स्थिति में भी अल्प–आयु का संकेत मिलता है।

Future Point

मध्य आयु :

- यदि सभी तीनों सेट द्विस्वभाव राशियों में हों तो मध्य–आयु का संकेत मिलता है।

अथवा

यदि प्रत्येक सेट का एक भाग चर राशि में हो तथा दूसरा स्थिर राशि में तो यह भी मध्य–आयु का द्योतक है।

पूर्ण आयु :

- यदि सभी तीनों सेट पूर्ण रुप से चर राशियों में हों तो पूर्ण आयु का संकेत मिलता है।

अथवा

यदि प्रत्येक सेट का एक भाग द्विस्वभाव राशि में हो और दूसरा स्थिर राशि में तो यह भी पूर्ण आयु का द्योतक है।

आयुः पितृदिनेशाभ्याम्।।1।।
प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम्।।2।।
प्रथम द्वितीययोरेन्त्ययोर्वा मध्यम्।।3।।
मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम्।।4।।
एवं मन्दचन्द्रभ्याम्।।5।।
पितृकालतश्च।।6।।
संवादात्प्रामाण्यम्।।7।।
विसंवादे पितृकालतः।।8।।
पितृलाभगे चन्द्रे चन्द्रमन्दाभ्याम्।।9।।

''जैमिनीयम उपदेशसूत्रम''
''द्वितीय अध्याये प्रथमः पादः''

Updesh Sutra of Jaimini
Commentary by - Prof. K. V. Abhyankar

आयु–खण्ड निर्णय (जैमिनी विधि)

तीन सेट विचार	अल्प–आयु (0–33 वर्ष)		मध्य–आयु (33–66 या 70 वर्ष)		पूर्ण–आयु (70 वर्ष से ऊपर)	
		या		या		या
लग्नेश	स्थिर	चर	द्विस्वभाव	चर	चर	स्थिर
अष्टमेश	स्थिर	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	द्विस्वभाव
लग्न	स्थिर	चर	द्विस्वभाव	चर	चर	स्थिर
चन्द्र	स्थिर	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	द्विस्वभाव
लग्न	स्थिर	चर	द्विस्वभाव	चर	चर	स्थिर
होरा–लग्न	स्थिर	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	द्विस्वभाव

Future Point

विशेष :

1. कम से कम 2 सेट एक ही प्रकार की आयु दिखाएं तो उसे स्वीकारना चाहिये।
2. यदि तीनों सेटों में अलग–अलग प्रकार की आयु दिखाएं तो तो अन्तिम सेट (लग्न तथा होरा लग्न) में वर्णित आयु ही स्वीकार की जाएगी।
   - यदि चन्द्र, लग्न या सप्तम भाव में हो तो लग्न तथा चन्द्र वाले सेट की आयु स्वीकार करनी चाहिये।
   - कुछ ज्योतिषियों का मत है कि चन्द्र तथा लग्न की बजाय चन्द्र और आयुष्कारक शनि पर विचार किया जाना चाहिए।
3. इस प्रकार प्राप्त आयु हरण और भरण संस्कारों पर निर्भर करेगी, जो इस विधि द्वारा निर्धारित आयु पर किये जाएंगे।

कक्ष्या ह्रास :

1. यदि शनि लग्नेश अथवा अष्टमेश हो, और न उच्च का हो, न ही अपने भाव में हो तथा न ही शुभ दृष्ट हो तो 1 कक्ष्या का ह्रास होता है।
2. यदि लग्न अथवा सप्तम भाव का अष्टमेश, आत्मकारक बने अथवा आत्मकारक से युत हो तो 1 कक्ष्या का ह्रास होता है।
3. जब लग्न या सप्तम भाव पापकर्तरी में (दो अशुभ ग्रहों के बीच) हों अथवा उनसे अशुभ ग्रह त्रिकोण (1–5–9) में हों, तो 1 कक्ष्या की क्षति होती है।
4. यदि आत्मकारक अशुभ और दुर्बल हो अथवा अशुभ ग्रहों के साथ उसका योग हो तो 1 कक्ष्या की क्षति होती है।
5. जब आत्मकारक के साथ अथवा उससे सप्तम भाव में अशुभ ग्रह हों अथवा उनमें से कोई भी पापकर्तरी में हो अथवा उनमें से किसी से त्रिकोणों में अशुभ ग्रह हों तो एक कक्ष्या का ह्रास होता है।

कक्ष्या वृद्धि :

1. यदि आत्मकारक उच्च हो अथवा गुरु के साथ युत हो तो 1 कक्ष्या की वृद्धि होती है।
2. यदि आत्मकारक के साथ अथवा उससे सप्तम में शुभ ग्रह हों अथवा इससे त्रिकोण में शुभग्रह हों तो 1 कक्ष्या की वृद्धि होती है।
3. यदि लग्न अथवा सप्तम भाव शुभकर्तरी में हो अथवा उससे त्रिकोणों में शुभग्रह हों तो 1 कक्ष्या की वृद्धि होती है।
4. यदि आत्मकारक शुभ और उच्च हो अथवा शुभ ग्रहों से उसकी युति हो तो 1 कक्ष्या की वृद्धि होती है।

Future Point

आयु–खण्ड निर्धारण (जैमिनी विधि):

होरा लग्न की संगणना

I. पराशर होरा लग्न

चरण–I

- जन्म दिन का स्थानीय सूर्योदय नोट करें।
- घण्टों तथा मिनटों में स्थानीय सूर्योदय तथा स्थानीय जन्म–समय में अन्तर ज्ञात करें (दोनों के हेतु भारतीय मानक समय भी प्रयोग कर सकते हैं)।

चरण–II

- घण्टे पूर्ण राशियाँ हो जाते हैं।
- मिनटों को 2 से विभाजित करने पर अंश प्राप्त होते हैं।

उदाहरण– यदि सूर्योदय तथा जन्म समय के बीच 10 घंटे 20 मिनट का अन्तर हो तो

– पूर्ण राशियाँ होंगी – $10^{रा}$ – मकर।

– 20/2 = 10 अंश हुए

= कुम्भ 10° अथवा $10^{रा}10°$

चरण–III

- यदि लग्न विषम हो तो सूर्य के भोगांश में राशियों तथा अंशों को जोड़ें।
- यदि लग्न सम हो तो लग्न के भोगांश में राशियों तथा अंशों को जोड़ें।

परिणाम पराशर होरा लग्न निकलता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली

इन्दिरा गाँधी

जन्म दिन 19–11–1917 जन्म समय–23 बजकर 11 मिनट जन्मस्थान–इलाहाबाद

सूर्योदय–$6^{घ.}$–$23^{मि.}$–$42^{से.}$. सूर्यास्त $17^{घ.}$–$12^{मि.}$–$03^{से.}$.

लग्न

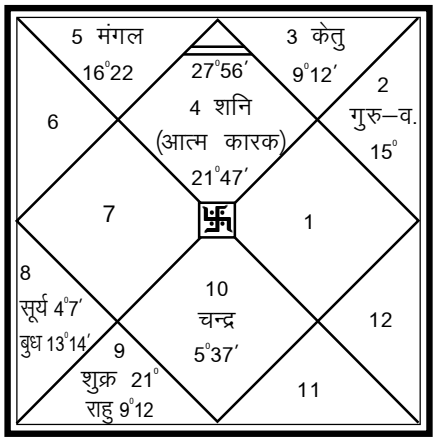

नवांश

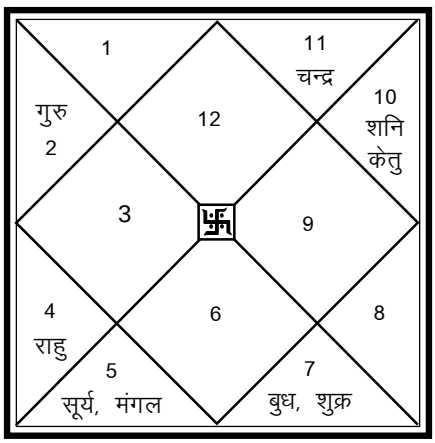

Future Point

पराशर होरा लग्न

चरण–I

जन्म–समय $23^{घ.}–11^{मि.}–00^{स.}$

सूर्योदय – $6^{घ.}–23^{मि.}–42^{स.}$

$= 16^{घ.}–47^{मि.}–18^{स.}$

चरण–II

घण्टे पूर्ण राशियाँ है, 2 से विभाजित मिनट अंश हैं। $= 4^{रा}\,24°$

चरण–III

लग्न में राशि विषम राशि है, अतः होरा लग्न प्राप्त करने के लिए $4^{रा}–24°$को लग्न के भोगांश में जोड़ा जाना चाहिए।

लग्न = $3^{s}\,27°\;56'$

\+ $4^{s}\,24°\;00'$

$8^{s}\,21°\;56'$

पराशर होरा लग्न धनु $21°56'$ है

II. वृधिकारिका होरा लग्न अथवा जैमिनी होरा लग्न

चरण–I :

- ज्ञात करें कि जन्म दिन में हुआ है अथवा रात्रि में। (सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच का जन्म दिन का जन्म होता है तथा सूर्यास्त से सूर्योदय के बीच का जन्म रात्रि का)।
- दिन के जन्म का दिनमान/रात्रि के जन्म का रात्रिमान

  12

  = 1 होरा अथवा क्यू–I (घटी–पल में)

चरण–II :

- इष्टकाल ज्ञात करें– (घटी पल में सूर्योदय तथा जन्म–समय के बीच का अन्तर इष्टकाल है।)
- इष्टकाल

  होरा (क्यू–I)

  = क्यू–II

चरण–III :

- क्यू II में 1 जोड़ें (क्यू II+1) = $अ^{रा}ब^{0}$

यह लग्न से गणना की जानेवाली राशि अंश है।

Future Point

– यदि लग्न विषम हो तो राशियों को कुंडली के भावों के अनुसार ही गिनें। ↻ (Direct)

– यदि लग्न सम हो तो राशियों को कुंडली के भावों से उल्टी तरफ गिनें। ↺ (Indirect)

– इस विधि से प्राप्त राशि जैमिनी होरा लग्न होगी।

विशेष : घण्टों और मिनटों को 2.5 से गुणा कर घटी–पल में परिवर्तित किया जा सकता है।

घंटे–मिनट × 2.5 = घटी पल।

वृद्धिकारिका होरा लग्न (जैमिनी)

चरण–I

यह रात्रि जन्म है।

इसलिए रात्रिमान = 1 होरा अथवा क्यू–I

12

रात्रिमान–सूर्यास्त तथा सूर्योदय के बीच का अन्तर ज्ञात करें। रात्रिमान घटी पल में प्राप्त करने के लिए घण्टे तथा मिनट का 2.5 से गुणा करें। पलों को दशमलव में परिवर्तित करें।

रात्रिमान = 33 घटि = 2.75 घटी = क्यू–I (1 होरा)

12

चरण–II

घटी–पल में इष्टकाल ज्ञात करें।

इष्टकाल

होरा (क्यू–I)

$= \frac{41.97 \text{ घटी}}{2.75}$

= 15.26= क्यू–II

चरण–III

क्यू–II+1

$15.26+1=16^{\text{रा}}.26^{\text{o}}=4^{\text{रा}}26^{\text{o}}$

लग्न सम है, अतः पूर्ण (राशि अंश) की उल्टी (Indirect) गणना की जाएगी। जैमिनी होरा लग्न मेष होगी।

Future Point

Future Point

Rough working.

रात्रिमान

24.00.00 घण्टे–मध्यरात्रि

– 17.12.03 घण्टे–सूर्यास्त

$6^{घ.}7^{मि.}57^{से.}$

\+ 6. 24.00 घण्टे सूर्योदय

$13^{घ.}11^{मि.}57^{से.}$

घटी पल में परिवर्तन

× 2.5

32घ–59पल–53विपल

= 33 घटी

इष्टकाल

$23^{घ.}11^{मि.}00^{से.}$ जन्म समय

– 6–23–42–सूर्योदय

= $16^{घ.}–47^{मि.}–18^{से.}$

घटी पल में परिवर्तन

× 2.5

41घ–58पल–06विपल

= 41.97 घटी

जैमिनी विधि द्वारा इन्दिरा गाँधी का आयु निर्णय

जन्म दिन–19.11.1917

जन्म समय – 23 घं 11 मि.

जन्म स्थान – इलाहाबाद

सूर्योदय–6 घं. 23 मि. 42 से.

सूर्यास्त– 17 घं. 12 मि. 03 से.

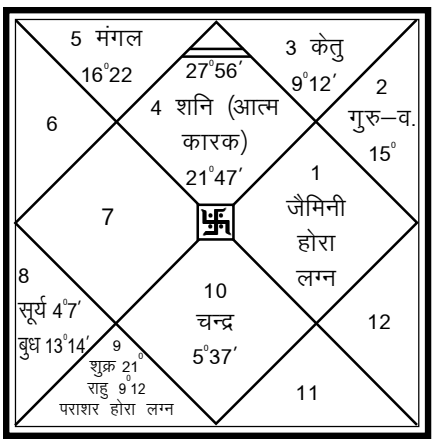

3 सेट		राशी में स्थित	राशि	आयु
1.	लग्नेश अष्टमेश	मकर कर्क	चर चर	पूर्ण आयु
2.	लग्न चन्द्र	कर्क मकर	चर चर	पूर्ण आयु
3.(अ)	लग्न होरा लग्न (पराशर)	कर्क धनु	चर द्विस्वभाव	अल्प आयु
3.(ब)	लग्न होरा लग्न (जैमिनी)	कर्क मेष	चर चर	पूर्ण आयु

– पूर्ण आयु के अधिक संकेत हैं।

– कक्ष्या ह्रास तथा वृद्धि इसके बाद होगी।

ह्रास :

1. शनि लग्न से अष्टम भाव का स्वामी है और वह आत्माकारक है इसलिए एक कक्ष्या का ह्रास हुआ।
2. लग्न पापकर्तरी में है, अतः एक कक्ष्या का और ह्रास हुआ।

वृद्धि :

1. आत्माकारक से सप्तम भाव में शुभ चन्द्र है, अतः एक कक्ष्या की वृद्धि हुई।

कक्ष्या का दो बार ह्रास हुआ है, तथा एक बार कक्ष्या वृद्धि हुई है। अतः हम आयु निर्णय मध्य आयु के रूप में कर सकते हैं। इन्दिरा गाँन्धी की हत्या 31 अक्तूबर 1984 को हुई जब उनकी आयु लगभग 67 वर्ष थी।

अभ्यास

प्र. 1. जैमिनी आयुर्दाय के अनुसार आयु–खण्ड का निर्णय कैसे किया जा सकता है ?

प्र. 2. हरण संस्कार का वर्णन करें।

प्र. 3. भरण संस्कार का वर्णन करें।

प्र. 4. जैमिनी आयुर्दाय विधि के अनुसार अपनी जन्मकुंडली का आयुखंड निर्धारित करें।

Future Point

9. पिण्डायु

''ग्रहदत्त आयुर्दाय'' (पराशर)

''ग्रहों द्वारा प्रदान की गयी आयु''

पिण्डायु आयु निर्णय की सर्वोत्तम विधियों में से एक है। यदि ग्रहों तथा लग्न में सूर्य सर्वाधिक बली है तो पिण्डायु विधि का प्रयोग किया जाता है। ग्रहों तथा लग्न के बल का निर्धारण सामान्यतया ग्रहबल तथा भावबल के द्वारा किया जाता है। यदि निर्णय शीघ्र करना हो तो 'दिग्बल' की सहायता ली जा सकती है। सूर्य दशम भाव में दिग्बली हो जाता है।

सूर्य से शनि तक सातों ग्रह यदि अपने परम उच्चांश पर हों तो वे आयु के कुछ निश्चित वर्ष प्रदान करते हैं और अपने परम नीच अंश पर इस आयु की आधी आयु प्रदान करते हैं। यदि वे दोनों के बीच स्थित हों तो आयु निर्णय, अनुपात–समानुपात के अनुसार किया जा सकता है।

ग्रह	परम उच्चांश	परम नीच अंश
सूर्य	10°–मेष	10°–तुला
चन्द्र	3°–वृष	3°–वृश्चिक
मंगल	28°–मकर	28°–कर्क
बुध	15°–कन्या	15°–मीन
गुरु	5°–कर्क	5°–मकर
शुक्र	27°–मीन	27°–कन्या
शनि	20°–तुला	20°–मेष

जब ग्रह परम उच्चांश पर हो तो निश्चित आयु (ग्रह का पूर्ण काल) प्रदान करता है।

सूर्य	–	19 वर्ष
चन्द्र	–	25 वर्ष
मंगल	–	15 वर्ष
बुध	–	12 वर्ष
गुरु	–	15 वर्ष
शुक्र	–	21 वर्ष
शनि	–	20 वर्ष
	कुल	127 वर्ष

Future Point

विभिन्न अचार्यों के मत :

1. यवनाचार्य, मय, पराशर तथा मनिथ इस मत को मानते हैं।
2. जीव शर्मा (जीवायु) 120 वर्ष की आयु को पूर्णायु मानते हैं और सभी ग्रहों में समान वितरण करते हैं।

   120 वर्ष = 17.143 वर्ष प्रत्येक ग्रह के लिए

   7 ग्रह

   विद्वान् जीवायु को भी स्वीकार करते हैं।
3. बादरायण 100 वर्ष की आयु को पूर्णायु (1 शतक) मानते हैं। 100 वर्ष के बाद योगिक क्रियाओं तथा नियमनिष्ठा से आयु में वृद्धि की जाती है।

   $100 = 14.28$ वर्ष प्रत्येक ग्रह के लिये।

   7

विधि :

1. ग्रहों के निरयण रेखांशों को अंशों में परिवर्तित करें।

   राशि–अंश–पल के साथ ग्रह का पूर्ण रेखांश परिवर्तित किया जाना चाहिए।

उदाहरण–

यदि कोई ग्रह 5^{o} मकर राशि में है तो इसे अंशों में परिवर्तित करने पर यह $9^{रा}5^{o}–00' = 9 \times 30 + 5 = 275^{o}$ होगा।

2. इन ग्रहों के परिवर्तित अंशों से इनके परमोच्चांश बिन्दुओं के अक्षांश को घटाएं। इससे हमें आयु की चाप प्राप्त होगी।
3. यदि परिणाम 180^{o} (6 राशि) से कम हो तो इस अंक को 360^{o} से घटाएं।
   - यदि 180^{o} (6 राशि) से अधिक हो तो इसे यथावात् रखें।
4. प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त वर्षों की गणना करें।

सूत्र :

$$\frac{\text{ग्रह का पूर्ण काल} \times \text{आयु की चाप}}{360^{o}}$$

= अनुपात समानुपात

= (ग्रह पद्रत्त वर्ष)

5. प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त वर्षों को जोड़ें।
6. हरण संस्कार करें।

Future Point

(i) चक्रपथ हरण

(ii) अस्तंगत हरण

(iii) शत्रु क्षेत्र हरण

7. आयु को जोड़ें
8. क्रूरोदय हरण करें।
9. लग्न आयु की गणना करें।
10. सावन वर्षों (360 दिन) में समापक पिण्डायु ज्ञात करने के लिए पूर्व गणित आयु को लग्न आयु में जोड़ें।
11. सावन वर्षों को सौर वर्षों (365 दिन) में परिवर्तित करें।

उदाहरण :

इन्दिरा गाँधी

जन्मतिथि – 19.11.1917

जन्म समय – 23.11 घं.

जन्म स्थान – इलाहाबाद

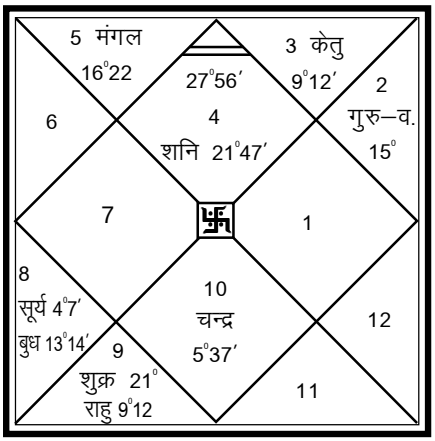

ग्रहों के परम उच्च अंश

सूर्य 10°

चन्द्र 33°

मंगल 298°

बुध 165°

गुरु 95°

शुक्र 357°

शनि 200°

Future Point

इन्दिरा गाँधी की पिण्डायु

ग्रह	रेखांश–परम उच्च अंश	आयु का चाप (दशमलव में)	ग्रह का पूर्ण काल x आयु का चाप / 360	प्रदत्त वर्ष
1. सूर्य $=7^{S}4^{o}07'$ $=214^{o}07'$	$=214^{o}07'-10^{o}=204^{o}7'$	$=204.12^{o}$	$\frac{19\times204.12}{360}$=10.773 वर्ष	=10.773 वर्ष
2. चंद्र $=9^{S}5^{o}37'$ $=275^{o}37'$	$=275^{o}37'-33^{o}=242^{o}37'$	$=242.62^{o}$	$\frac{25\times242.62}{360}$=16.848 वर्ष	=16.848 वर्ष
3. मंगल $=4^{S}16^{o}22'$ $=136^{o}22'+360^{o}$	$=496^{o}22'-298^{o}=198^{o}22'$	$=198.37^{o}$	$\frac{15\times198.37}{360}$=8.265 वर्ष	=8.265 वर्ष
4 बुध $=7^{S}13^{o}14'$ $=223^{o}14'$	$=223^{o}14'-165^{o}=58^{o}14'$ परिणाम 180^{o} से कम है, इसलिए 360^{o} से इसे घटाकर शुद्ध करें $=360^{o}-58^{o}14=301^{o}46'$	$=301.77^{o}$	$\frac{12\times301.77}{360}$=10.059 वर्ष	=10.059 वर्ष
5 गुरु $=1^{S}15^{o}=45^{o}$	$=405^{o}-95^{o}=310^{o}$ $(45^{o}+360^{o})$	$=310^{o}$	$\frac{15\times310}{360}$=12.916 वर्ष	=12.916 वर्ष
6 शुक्र $=8^{S}21^{o}=261^{o}$	$=621^{o}-357^{o}=264^{o}$ $(261^{o}+360^{o})$	$=264^{o}$	$\frac{21\times2640}{360}$=15.4 वर्ष	=15.4 वर्ष
7. शनि $=3^{S}21^{o}47'$ $=111^{o}47'$	$=471^{o}47'-200^{o}=271^{o}47'$ $(111^{o}+360^{o})$	$=271.78^{o}$	$\frac{20\times271.78}{360}$=15.09 वर्ष	=15.09 वर्ष
			कुल	= 89.351 वर्ष $= 89^{व}-4^{म}-6^{दि}$

प्राप्त आयु का शुद्धीकरण (हरण) चार प्रकार से किया जाएगा।

Future Point

शुद्धीकरण :

आयु में ह्रास या हरण निम्नलिखित कारणों से होता है :

1. चक्रपथ हरण
2. अस्तंगत हरण
3. शत्रुक्षेत्र हरण
4. क्रूरोदय हरण

1. चक्रपथ हरण :

यह हरण ग्रहों की सप्तम से द्वादशम भावों में स्थिति के कारण किया जाता है।

अधिकतम हरण ग्रहों के द्वादशम भाव में स्थिति के कारण होता है।

भाव	अशुभ ग्रह	शुभ ग्रह
12वाँ	पूर्ण क्षति	अर्द्ध क्षति
11वाँ	अर्द्ध क्षति	1/4 क्षति
10वाँ	1/3 क्षति	1/6 क्षति
9वाँ	1/4 क्षति	1/8 क्षति
8वाँ	1/5 क्षति	1/10 क्षति
7वाँ	1/15 क्षति	1/12 क्षति

यदि इन भावों में शुभ और अशुभ ग्रह दोनों स्थित हों तो :

1. बुध और चन्द्र अशुभ नहीं माने जाते।
2. सूर्य, मंगल और शनि अशुभ होते हैं।
3. राहु तथा केतु की गणना नहीं की जाती।

यदि इन भावों में एक से अधिक ग्रह एक साथ स्थित हों तो सबसे बली का ह्रास होगा, शेष का ह्रास नहीं होगा।

Future Point

2. अस्तंगत हरण :

किसी अस्तंगत ग्रह की चक्रपथ हरण के बाद प्राप्त आयु में आधी की क्षति होती है।

ग्रह	अस्तंगत का अंश
चन्द्र	सूर्य से 12° आगे या पीछे
मंगल	सूर्य से 17° आगे या पीछे
बुध (मार्गी)	सूर्य से14° आगे या पीछे
वक्री	सूर्य से 12° आगे या पीछे
गुरु	सूर्य से 11° आगे या पीछे
शुक्र (मार्गी)	सूर्य से 10° आगे या पीछे
वक्री	सूर्य से 8° आगे या पीछे
शनि	सूर्य से 15° आगे या पीछे

शनि व शुक्र को अस्तंगत हरण से मुक्त रखा गया है।

3. शत्रुक्षेत्र हरण

यदि कोई ग्रह अपनी शत्रु राशि (नैसर्गिक मैत्री के अनुसार) में स्थित हो तो अस्तंगत हरण के बाद 1/3 का एक और हरण किया जाता है।

यह हरण निम्नलिखित पर लागू नहीं होता :

1. वक्री ग्रह
2. मकर में मंगल

मंगल के सम्बन्ध में ज्योतिषियों में मतभेद है।

4. क्रूरोदय हरण

जब एक या एक से अधिक क्रूर ग्रह अर्थात् शनि, मंगल या सूर्य लग्न में स्थित हों तो क्रूरोदय हरण लागू होता है।

(i) लग्न अंशों (राशि छोड़कर) को मिनटों में बदलें।

(ii) इन मिनटों का शत्रुक्षेत्र हरण के बाद ग्रहों द्वारा प्रदत्त आयु से गुणा करें।

(iii) इस प्रकार प्राप्त अंकों का 21,600 (360° मिनटों में परिवर्तित) से भाग करें।

(iv) ग्रह–दत्त आयु में से भागफल (Quotient) को घटाएं।

Future Point

- यदि किसी शुभग्रह की लग्न पर दृष्टि हो तो 1/2 भागफल घटाएं।
- यदि कोई शुभग्रह भी लग्न में स्थित हो तो :
  - यदि शुभग्रह लग्न अंश के अधिक समीप हो तो :
  - कोई हरण नहीं होगा।
  - यदि अशुभ ग्रह लग्न अंश के समीप हो तो 1/2 भागफल घटाएं।

इन्दिरा गाँधी का हरण संस्कार

ग्रह	वर्ष	चक्र पथ हरण (1)	अस्तंगत हरण (2)	शत्रुक्षेत्र हरण (3)	हरणोपरान्त वर्ष
सूर्य	10.773	–	–	–	10.773 वर्ष
चन्द्र	16.848	सप्तम भाव में स्थित होने के कारण 1/12 की क्षति = 15.444 वर्ष	–	–	15.444 वर्ष
मंगल	8.265	–	–	–	8.265 वर्ष
बुध	10.059	–	5.0295	–	5.0295 वर्ष
गुरु	12.916	11वें भाव में स्थित होने के कारण 1/4 की क्षति =9.687 वर्ष	–	–	9.687 वर्ष
शुक्र	15.4	15.4	–	–	15.4 वर्ष
शनि	15.9	–	–	1/3 की क्षति इसलिए 10.06 वर्ष की प्राप्ति =10.06 वर्ष	10.06 वर्ष

कुल 74.6585 वर्ष

शनि का क्रूरोदय हरण –2.8965 वर्ष

क्रूरोदय हरणोपरान्त = 71.7620 वर्ष

Future Point

शनि का क्रूरोदय हरण :

शनि लग्न में स्थित है, अतः शनि का क्रूरोदय हरण होगा। लग्न के अंशों (राशियों को छोड़कर) को मिनट में बदलें।

लग्न–$3^{S}27^{o}56' = 27^{o}56 = 1676'$

$$\frac{\text{शत्रु क्षेत्र हरणोपरान्त ग्रह दत्त आयु} \times \text{लग्न के मिनट}}{216000' \ (360^{o})}$$

$$\frac{74.6585 \times 1676}{21600} = 5.7929 \text{ वर्ष}$$

ब. शुभग्रह चन्द्र से दृष्टिगत होने के कारण शनि की इन वर्षों में 1/2 की क्षति होगी।

= 2.8965 वर्ष

लग्न आयु को हरणोपरान्त प्राप्त आयु में जोड़ा जाएगा।

लग्न आयु

1. लग्न की राशि अंश व मिनट नोट करें। राशियों का परित्याग करें तथा अंशों को मिनटों में बदलें।
2. लग्न जितने नवांश पर स्थित है उतने वर्ष आयु प्रदान करेगी।
3. लग्न द्वारा प्रदत्त वर्ष तथा माह ज्ञात करने के लिए लग्न के मिनटों का 200 से भाग करें क्योंकि 1 नवांश $3^{0}20'$ (200′) है।

- लग्न $3^{रा}27^{o}56'$ है (लग्न नवम नवांश में है)
- $3^{रा}$ का परित्याग करें, और $27^{o}56'$ को मिनटों में बदलें = 1676′
- $\frac{1676}{200}$ =8.38 वर्ष=लग्न द्वारा प्रदान की गयी आयु (लग्नायु)।

पिण्डायु :

- हरणोपरान्त प्राप्त वर्ष = 71.7620 वर्ष
  लग्न आयु = +8.38 वर्ष
  कुल आयु = 80.1420 सावन वर्ष
  (1 सावन वर्ष=360 दिन, 1 सौर वर्ष = 365 दिन)
- सौर वर्षों में बदलें

$$= \frac{80.142 \times 360}{365}$$

= 79.044 वर्ष (सौर)

पिण्डायु = 79 वर्ष–0 माह – 16 दिन

Future Point

अभ्यास

प्र. 1. पिण्डायु ज्ञात करने की विधि का वर्णन करें।

प्र. 2. चक्र पथ हरण कैसे निकाला जाता है ?

प्र. 3. शत्रु क्षेत्र हरण कैसे ज्ञात किया जाता है ?

प्र. 4. क्रूरोदय हरण कैसे ज्ञात किया जाता है ?

प्र. 5. राजीव गाँधी की जन्मकुण्डली की पिण्डायु निकालें।

राजीव गाँधी

20 अगस्त 1944

8.11.40 पूर्वाह्न (युद्ध काल)

बम्बई (मुम्बई)

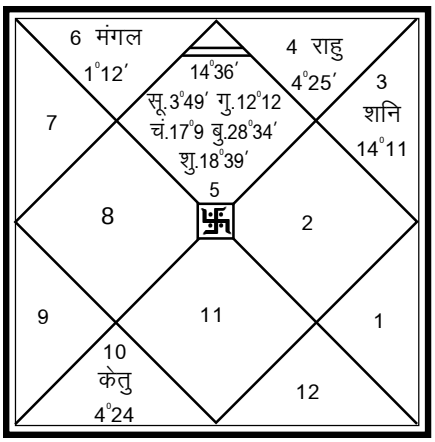

Future Point

10. अंशायु

अंशायु आयु निर्णय की गणना की एक और अति महत्त्वपूर्ण एवं उत्तम विधि है। जब लग्न सर्वाधिक बली हो तो इसका अनुसरण किया जाता है।

''एक नवांश एक वर्ष की आयु प्रदान करता है।'' यही अंशायु विधि का आधार है। अतः लग्न या प्रत्येक ग्रह जितने नवांश में स्थित है उतने ही वर्ष की आयु प्रदान करेगा। अतः 1 संपूर्ण राशि 9 वर्ष की आयु प्रदान कर सकती है।

विधि :

1. ग्रहों तथा लग्न के सम्पूर्ण निरयण भोगांश को मिनटों में बदलें।
2. उनमें से प्रत्येक का 200′ (1 नवांश) से भाग करें।
3. यदि भागफल 12 से अधिक हो तो इसमें से 12 के गुणज को घटाएं। शेष ग्रहों तथा लग्न द्वारा दी गयी आयु होगी। यदि भागफल 12 हो तो इसे 12 मानें।
4. निम्नलिखित विधि से भरण संस्कार करें।
5. पिंडायु की तरह हरण संस्कार करें। केवल क्रूरोदय हरण लागू नहीं होगा।
6. भरण तथा हरण संस्कार से अंशायु प्राप्त हो जाएगी।

भरण संस्कार :

- यदि ग्रह उच्च या वक्री हो, तो ग्रह दत्त आयु का 3 से गुणा करें।
- यदि ग्रह वर्गोत्तम, अपनी राशि में, या अपने नवांश या अपने द्रेक्काण में हो तो आयु को दोगुणा करें, अर्थात् 2 से गुणा करें।
- यदि ग्रह उच्च या वर्गोत्तम हो तो वर्षों को केवल एक बार द्विगुणित करें।
- यदि ग्रह वक्री तथा वर्गोत्तम हो, तो आयु को 3 उसे गुणा करें।

Future Point

Future Point

अंशायु–इन्दिरा गाँधी

ग्रह	भोगांश	अंशों में परिवर्तित	मिनट	200 से विभाजित और शेष	ग्रह दत्त आयु
1. सूर्य	$7^{\text{रा}}4^{o}07'$	$214^{o}07'$	$12847'$	$\frac{12847}{200} = 4.23$ वर्ष	$4^{\text{व.}}\ 2^{\text{मा.}}\ 23^{\text{दि}}$
2. चन्द्र	$9^{\text{रा}}5^{o}37'$	$275^{o}37'$	$16537'$	$\frac{16537}{200} = 10.68$ वर्ष	$10^{\text{व.}}\ 8^{\text{मा.}}\ 5^{\text{दि}}$
3. मंगल	$4^{\text{रा}}16^{o}22'$	$136^{o}22'$	$8182'$	$\frac{8182}{200} = 4.91$ वर्ष	$4^{\text{व.}}\ 10^{\text{मा.}}\ 27^{\text{दि}}$
4. बुध	$7^{\text{रा}}13^{o}14'$	$223^{o}14'$	$13394'$	$\frac{13394}{200} = 6.97$ वर्ष	$6^{\text{व.}}\ 11^{\text{मा.}}\ 19^{\text{दि}}$
5. गुरु	$1^{\text{रा}}15^{o}$	45^{o}	$2700'$	$\frac{2700}{200} = 1.5$ वर्ष	$1^{\text{व.}}\ 6^{\text{मा.}}$
6. शुक्र	$8^{\text{रा}}21^{o}$	261^{o}	$15660'$	$\frac{15660}{200} = 6.3$ वर्ष	$6^{\text{व.}}\ 3^{\text{मा.}}\ 18^{\text{दि}}$
7. शनि	$3^{\text{रा}}21^{o}47'$	$111^{o}47'$	$6707'$	$\frac{6707}{200} = 9.53$ वर्ष	$9^{\text{व.}}\ 6^{\text{मा.}}\ 11^{\text{दि}}$
8. लग्न	$3^{\text{रा}}27^{o}56'$	$117^{o}56'$	$7076'$	$\frac{7076}{200} = 11.38$ वर्ष	$11^{\text{व.}}\ 4^{\text{मा.}}\ 17^{\text{दि}}$
				कुल =	$55^{\text{व.}}\ 6^{\text{मा.}}$

ग्रह	प्रदत्त वर्ष	उच्च/वक्री	वर्गोत्तम स्व–राशि, स्व–नवांश अथवा द्रेक्काण	भरणोपरान्त वर्ष
1. सूर्य	4.23	–	–	4.23
2. चन्द्र	10.68	–	–	10.68
3. मंगल	4.91	–	वर्गोत्तम × 2 = 9.82व.	9.82
4. बुध	6.97	–	–	6.97
5. गुरु	1.5	× 3=4.5व.	नहीं हुआ, एक ही बार गुणा किया	4.5
6. शुक्र	6.3	–	स्वनवांश× 2 = 12.6व.	12.6
7. शनि	9.53	–	स्वनवांश × 2 = 19.06व.	19.06
8. लग्न	11.38	–	–	11.38
कुल	55.5 वर्ष भरण पूर्व		कुल	79.24 भरणोपरान्त

Future Point

हरण संस्कार

ग्रह	वर्ष	चक्र पथ हरण	अस्तंगत हरण	शत्रु क्षेत्र हरण	हरणोपरान्त वर्ष
सूर्य	4.23	–	–	–	4.23
चन्द्र	10-68	7वें भाव में स्थित इसलिए 1/12 की क्षति =9.79 वर्ष	– – –	– – –	9.79
मंगल	9.82	–	–	–	9.82
बुध	6.97	–	1/2 की क्षति = 3.485	–	3.485
गुरु	4.5	11वें भाव में स्थित इसलिए 1/4 की क्षति =3.375 वर्ष	–	–	3.375
शुक्र	12.6	–	–	–	12.6
शनि	19.6	–	–	1/3 की क्षति इसलिए 13.07	13.07
लग्न	11.38				11.38
कुल	79.24 वर्ष हरण पूर्व			कुल	67.749 हरणोपरान्त

= 67 वर्ष 9 माह

अंशायु=67 वर्ष 9 माह

नोट : अंशायु से अत्यन्त परिशुद्ध परिणाम मिला है। व्यवहार में पाया जाता है कि अंशायु विधि सबसे सटीक विधि है।

अभ्यास

प्र. 1. अंशायु विधि का वर्णन करें।

प्र. 2. भरण संस्कार का वर्णन करें।

प्र. 3. हरण संस्कार का वर्णन करें।

प्र. 4. राजीव गाँधी की जन्मकुण्डली का अंशायु निकालें।

Future Point

11. निसर्गायु

यह विधि सभी कुण्डलियों पर लागू नहीं की जा सकती। कल्याण वर्मा (सारावली) और मनित के अनुसार निसर्गायु का उपयोग उन जन्मकुण्डलियों के लिए किया जा सकता है जिनका चन्द्र सर्वाधिक बली हो।

निसर्गायु विधि और पिण्डायु विधि लगभग समान हैं। अन्तर केवल इतना है कि ग्रह अपने उच्चांश पर अलग–अलग वर्ष प्रदान करते हैं।

सूर्य	–	20 वर्ष
चन्द्र	–	01 वर्ष
मंगल	–	02 वर्ष
बुध	–	09 वर्ष
गुरु	–	18 वर्ष
शुक्र	–	20 वर्ष
शनि	–	50 वर्ष

इन्दिरा गाँधी की कुण्डली में यह विधि लागू नहीं की जा सकती क्योंकि उसमें लग्न, सूर्य और चन्द्र में चन्द्र सर्वाधिक बली ग्रह नहीं है।

अभ्यास

प्र. 1. निसर्गायु विधि का उपयोग कब किया जा सकता है ?

प्र. 2. पिण्डायु और निसर्गायु में क्या अन्तर है ?

□

Future Point

12. आयु निर्णय की अन्य विधियाँ

1. वारायुर्ज्ञान :

मानसागरी में जन्म के साप्ताहिक दिन के अनुसार आयुनिर्णय का विधान है। यह विधि बहुत परिशुद्ध नहीं है।

जन्म दिन	आयु
रविवार	60 वर्ष
सोमवार	84 वर्ष
मंगलवार	74 वर्ष
बुधवार	64 वर्ष
गुरुवार	84 वर्ष
शुक्रवार	60 वर्ष
शनिवार	100 वर्ष

पूर्व वर्णित इन्दिरा गाँधी का उदाहरण लें। उनका जन्म सोमवार को हुआ था। वारायु विधि के अनुसार सोमवार को जन्मे किसी व्यक्ति की आयु 84 वर्षों की होती है, इसलिए उनकी आयु 84 वर्ष की होनी चाहिए थी। उनकी मृत्यु करीब 67 वर्ष में हुई है।

2. राश्यायु :

मानसागरी में विभिन्न राशियों में जन्म के लिये राश्यायु का विधान भी है। (चंद्र राशि)

मेष – 75 वर्ष 2 माह 15 घटि 12 पल
वृष – 85 वर्ष 6 माह 07 दिन
मिथुन – 85 वर्ष
कर्क – 70 वर्ष 5 माह 3 दिन
सिंह – 65 वर्ष
कन्या – 84 वर्ष
तुला – 85 वर्ष
वृश्चिक – 75 वर्ष 2 माह 7 दिन
धनु – 85 वर्ष
मकर – 81 वर्ष
कुम्भ – 61 वर्ष
मीन – 61 वर्ष

श्रीमती इन्दिरा गाँधी की राशि मकर थी।

Future Point

Future Point

मकर राशि में जन्म फल

कष्ट समय– 1, 3 मास, 3, 5, 7, 10, 32, 33, 43, 51 वर्ष। यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो 61 वर्ष में देव दोष से अल्प मृत्यु हो सकती है। उसके बाद व्यक्ति 81 वर्ष तक जीवित रहता है। कार्तिक शुक्ल 5, शुक्र, श्रवण नक्षत्र में देह–त्याग करता है। उनकी मृत्यु के समय पंचांग इस प्रकार था :

तारीख : 31–10–1983 बुध वार, कार्तिक शुक्ल पक्ष – अष्टमी, श्रवण नक्षत्र, शूल योग, विष्टि करण।

राश्यायु विधि के अनुसार उनकी आयु 81 वर्ष होनी चाहिए थी। किंतु, पंचांग कुछ–कुछ मानसागरी के अनुसार था, उनकी मृत्यु के समय।

3. राशि ध्रुवांक विधि

प्रत्येक राशि के लिए रशि मान निश्चित है। यह इस प्रकार है :

मेष	10
वृष	06
मिथुन	20
कर्क	05
सिंह	08
कन्या	02
तुला	20
वृश्चिक	06
धनु	10
मकर	14
कुम्भ	03
मीन	04

प्रत्येक ग्रह का ध्रुवांक उस राशि के मान के बराबर होगा जिसमें वह स्थित हों।

सभी ग्रहों के ध्रुवांक के कुल योग से आयु ज्ञात की जाएगी।

इन्दिरा गाँधी

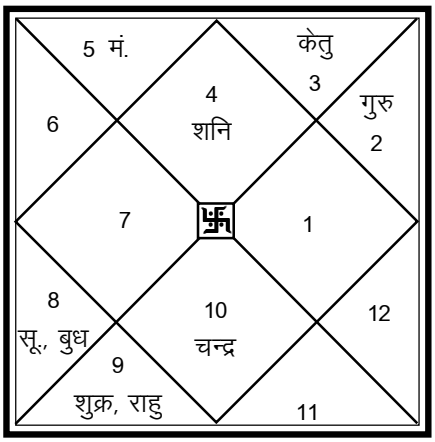

ग्रह	राशि	ध्रुवांक
सूर्य	वृश्चिक	6
चन्द्र	मकर	14
मंगल	सिंह	8
बुध	वृश्चिक	6
गुरु	वृष	6
शुक्र	धनु	10
शनि	कर्क	5
राहु	धनु	10
केतु	मिथुन	+ 20
कुल	—	85

ध्रुवांक का कुल योग 85 है। इस विधि के अनुसार उनकी आयु 85 वर्ष की होनी चाहिए थी।

4. केन्द्रायु :

अ.

1. लग्न से केन्द्रों में स्थित राशियों की संख्या नोट करें।
2. चारों संख्याओं को जोड़ें और योग का 3 से गुणा करें।
3. यदि शनि, मंगल या राहु किसी भी केन्द्र में स्थित हो तो गुणनफल से उस केन्द्र की संख्या को घटाएं। शेष संख्या आयु होगी।

इन्दिरा गाँधी

केन्द्र =

- 4+7+10+1=22
- 22×3=66

शनि लग्न में है इसलिए 4 घटाएं

66–4=62 वर्ष

ब.

श्री नेमिचन्द शास्त्री ने थोड़ी भिन्न विधि का उल्लेख किया है :

7 ग्रहों का निश्चित मान :

सूर्य	1
चन्द्र	2
मंगल	3
बुध	4
गुरु	5

Future Point

शुक्र 6
शनि 7
राहु 8
केतु 9

1. चारों केन्द्रों का कुल मान ज्ञात करें।
2. सभी त्रिकोणों (5वें भाव, 9वें भाव) का कुल मान ज्ञात करें।
3. केन्द्र स्थित ग्रहों का कुल मान ज्ञात करें।
4. त्रिकोण में स्थित ग्रहों का कुल मान ज्ञात करें।
5. केन्द्रों, त्रिकोणों और केन्द्र स्थित ग्रहों तथा त्रिकोणों में स्थित ग्रहों के मान को जोड़ें।
   – कुल योग का 12 से गुणा करें। और गुणनफल का 10 से भाग करें।
   – उपरोक्त गणना से प्राप्त फल से 12 घटाएं – शेष व्यक्ति आयु होगी।

उदाहरण :

- केन्द्रों का कुल योग :
  4+7+10+1=22
- त्रिकोणों का कुल योग :
  8+12=20
- केन्द्र स्थित ग्रहों का कुल योग :
  शनि= 7
  चन्द्र= + 2
  9
- त्रिकोण स्थित ग्रहों का कुल योग :
  सूर्य = 1
  बुध = + 4
  5
- केन्द्रों, त्रिकोणों तथा उनमें स्थित ग्रहों का कुल योग :
  केन्द्र = 22
  त्रिकोण = 20
  केन्द्र स्थित ग्रह = 9
  त्रिकोण स्थित ग्रह = 5
  कुल 56
- $\frac{56 \times 12}{10}$ = 67 वर्ष, 2 माह, 12 दिन
  = 67 वर्ष, 2 माह, 12 दिन

– 12 वर्ष

= 55 वर्ष, 2 माह, 12 दिन

आयु = 55 वर्ष, 2 माह, 12 दिन

5. पुरुषाकार ग्रह चक्र विधि नराकार ग्रह चक्र

यह चक्र मनुष्य के शरीर के आकार में बनाया जाता है। जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित होता है उसे मस्तिष्क पर लिखा जाता है और शेष ग्रह चक्र के अनुसार लिखे जाते हैं। शरीर के जिस भाग में जन्म नक्षत्र आता है वह आयु निर्दिष्ट करता है।

चक्र में नक्षत्रों का स्थान निर्धारण :

जिस नक्षत्र में सूर्य हो वह मस्तक पर रखा जाएगा।

मस्तक – 3 नक्षत्र
मुख – 3 नक्षत्र
दोनों कन्धे – 2 नक्षत्र (एक–एक दोनों तरफ)
दोनों बाँहें – 2 नक्षत्र (एक–एक दोनों तरफ)
हृदय – 5 नक्षत्र
दोनों हाथ – 2 नक्षत्र
नाभि – 1 नक्षत्र
गुदा – 1 नक्षत्र
दोनों घुटनें – 2 नक्षत्र
पाँव – 6 नक्षत्र

यदि जन्म नक्षत्र की स्थिति इस प्रकार हो :

शरीर के अंग	आयु
मस्तक	100 वर्ष
मुख	80 वर्ष
कन्धे	80 वर्ष
हाथ	77 वर्ष
बाहें	77 वर्ष
हृदय	68 वर्ष
नाभि	68 वर्ष
गुदा	60 वर्ष
घुटनें	8 वर्ष
पाँव	6 वर्ष

Future Point

इन्दिरा गाँधी का पुरुषाकार ग्रह चक्र

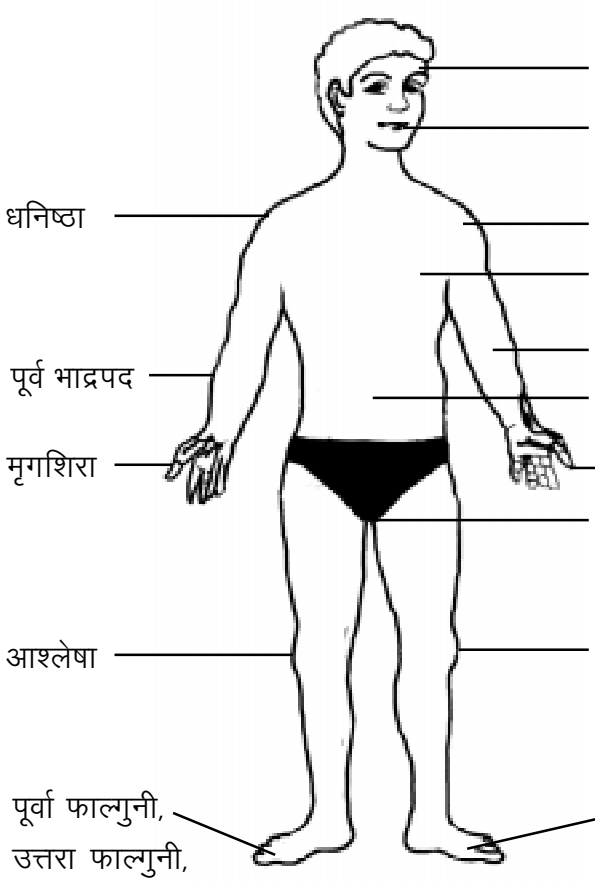

सूर्य–अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला

पूर्व आषाढ़, उत्तर आषाढ़ (जन्म नक्षत्र), श्रवण

धनिष्ठा

शतभिषा

रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी

उत्तर भाद्रपद

पूर्व भाद्रपद

पुनर्वसु

मृगशिरा

आर्द्रा

पुष्य

आश्लेषा

मघा

पूर्वा फाल्गुनी,
उत्तरा फाल्गुनी,
हस्त

चित्रा, स्वाति, विशाखा

Future Point

उदाहरण :

– इन्दिरा गाँधी का सूर्य अनुराधा नक्षत्र में था।

– उनका जन्म नक्षत्र उत्तर आषाढ़ था।

– उत्तर–आषाढ़ का स्थान मुँह है। इस विधि के अनुसार उनकी आयु 80 वर्ष होनी चाहिए थी।

6. ग्रह स्पष्ट विधि :

सूर्य, चन्द्र, गुरु, और शनि के अक्षांशों को जोड़ें। इससे कुछ भोगांश ज्ञात होगा। यदि शनि इस भोगांश पर गोचर करे तो व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है।

सावधानी :

गोचर अन्तिम स्थिति में लागू होता है।

गोचर लागू करने के पूर्व निम्नलिखित बिन्दुओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए :

1. आयु खण्ड
2. दशा अन्तरदशा

किसी व्यक्ति के जीवन में शनि का गोचर सामान्यतया केवल तीन बार होता है क्योंकि शनि 30 वर्षों में एक बार राशि चक्र पूरा करता है।

यदि व्यक्ति का जीवन अल्प–आयु खण्ड में हो और दशा अन्तरदशा भी प्रतिकूल हो तो शनि के गोचर से उसकी मृत्यु पहले ही दौर में हो सकती है।

यदि जीवन मध्य आयु खण्ड में हो तो मृत्यु शनि के दूसरे दौर में होगी, यदि आयु पूर्ण–आयु हो, तो तीसरे में और यदि व्यक्ति अति दीर्घायु हो तो चौथे में भी हो सकती है।

उदाहरण :

इन्दिरा गाँधी

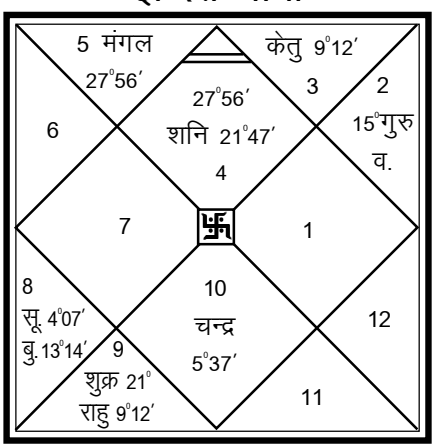

Future Point

सूर्य $7^S04^o07'$

चन्द्र $9^S05^o37'$

गुरु $1^S15^o00'$

शनि $+\ 3^S21^o47'$

$21^S\,16^o\ 31'$

-12

$9^S\,16^o\ 31'$

इन्दिरा गाँधी के निधन के समय शनि तुला में $24^o09'$ पर गोचर कर रहा था। वह मकर में संगणित $16^o31'$ पर गोचर नहीं कर रहा था। किन्तु, उस अंश के स्वामी (जन्म शनि) पर उसकी दृष्टि थी।

अभ्यास

प्र. 1. आयु निर्णय की उल्लिखित विधियों के बारे में क्या कहा जा सकता है ?

प्र. 2. किसी ज्ञात जन्मकुण्डली पर इन विधियों की जाँच कर अवलोकन करें।

□

Future Point

13. आयु निर्णय–उपसंहार

आयु निर्णय की इन सभी विधियों का उपयोग करने पर ज्ञात होता है कि जैमिनी आयुर्दाय, पिण्डायु तथा अंशायु विधियों से प्राप्त परिणाम अपेक्षाकृत अधिक परिशुद्ध होता हैं। इन्दिरा गाँधी की जन्मकुण्डली में अंशायु विधि से प्राप्त परिणाम अत्यन्त परिशुद्ध है और जैमिनी विधि से निकाले गयें आयुखण्ड का परिणाम भी पूर्ण शुद्ध है।

विभिन्न विधियों के अनुसार इन्दिरा गाँधी की आयु

1. जैमिनी आयुर्दाय – मध्य–आयु
2. पिण्डायु – 79 वर्ष, 0 माह, 16 दिन
3. अंशायु – 67 वर्ष, 9 माह
4. निसर्गायु – लागू नहीं

अन्य विधियाँ

1. वारायु – 84 वर्ष
2. राश्यायु – 81 वर्ष
3. राशि ध्रुवांक विधि – 85 वर्ष
4. केन्द्रायु (अ) – 62 वर्ष
   (ब) – 55 वर्ष, 2 माह, 12 दिन
5. पुरुषाकार ग्रह – 80 वर्ष
6. ग्रह स्पष्ट विधि शुद्ध परिणाम नहीं देती।

अन्य विधियों में कोई भी विधि शुद्ध नहीं है। उनकी हत्या के समय उनकी सही आयु लगभग 67 वर्ष थी।

Future Point

14. किस प्रकार की मृत्यु

अनेक ज्योतिषीय ग्रन्थों में उल्लेख है कि मृत्यु की प्रकार अष्टम भाव तथा उसमें स्थित ग्रह से ज्ञात किये जा सकते हैं।

मृत्युर्मृत्युगृहेक्षणेन बलिभिस्तद्धातुकोपोद्भवः
स्तत्संयुक्तभगात्रजो बहुभवो वीर्यान्वितैर्भूरिभिः।

अग्न्यम्ब्वायुधजोज्वराभयकृतस्तृट्क्षुत्कृतश्चाष्टमे
सूर्याद्यैर्निधने चरादिषु परस्वाध्वप्रदेशोष्विति।।1।।

''जातक परिजात''

–नैर्याणिकाध्याय

1. यदि अष्टम भाव में कोई ग्रह स्थित न हो और अष्टम भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो मृत्यु अष्टम भाव स्वामी के स्वभाव के कारण होगी। अष्टम भाव स्वामी यदि निम्नलिखित ग्रह हों, तो मृत्यु संबंधित त्रिदोष के अनुसार होगी।

8 स्वामी		**त्रिदोष (वात–पित्त–कफ)**
सूर्य	–	पित्त
चन्द्र	–	वात तथा कफ़
मंगल	–	पित्त
बुध	–	पित्त और कफ़
गुरु	–	कफ़
शुक्र	–	वात तथा कफ़

- वात–पित्त–कफ़ आयुर्वेद में वर्णित त्रिदोष हैं।
- मृत्यु संबंधित त्रिदोष में प्रदाह के कारण होगी।

2. यदि अष्टम भाव में ग्रह स्थित हों अथवा अष्टम भाव पर उनकी दृष्टि हो तो उनमें सर्वाधिक बली ग्रह के कारण, उससे संबंधित बीमारी से मृत्यु होगी।

सूर्य – आग का द्योतक है, इसलिए ज्वर।

चन्द्र – जल का द्योतक है, इसलिए हैजा, पेचिश, रक्तदोष, डूबना आदि जलसंक्रामक बीमारियाँ।

Future Point

मंगल – दुर्घटनाएं, अस्त्राघात–हैजा, प्लेग आदि महामारियाँ।

बुध – मस्तिष्क ज्वर अथवा चेचक।

गुरु – कोई भी बीमारी, जो ठीक से पहचानी न जा सके।

शुक्र – अत्यधिक मद्यपान से प्यास के कारण मृत्यु

शनि – भूख अथवा अत्यधिक भोजन के कारण मृत्यु।

- यदि अष्टम भाव में दो या दो से अधिक ग्रह स्थित हों तो दो या दो से अधिक बीमारियाँ हो सकती हैं।
- यदि अष्टम भाव में चर राशि हो तो मृत्यु घर से दूर हो सकती है। यदि राशि स्थिर हो तो मृत्यु घर पर हो सकती है। यदि राशि द्विस्वभाव हो तो मृत्यु घर के समीप हो सकती है। (अस्पताल ?)
- विभिन्न शास्त्रों में भिन्न–भिन्न स्थितियों में मृत्यु का उल्लेख है किन्तु उपरोक्त निर्देश पर्याप्त हैं। किस प्रकार से मृत्यु होगी यह बड़ा ही कठिन एवं भयावह निर्णय है।
- यदि यह निश्चय करना हो कि मृत्यु कैसे होगी, तब कुंडली के मारक ग्रहों के कारकत्व, जिन भावों में वे स्थित हैं उनके कारकत्व, जिस प्रकार की राशियों में वे स्थित हैं, उनके कारकत्व, तथा जिन ग्रहों की दशा सक्रिय है, इन सब का विचार करके कुछ संकेत मिल सकता है। उल्लेख है कि यह गहन शोध का विषय है।
- इन्दिरा गांधी की कुंडली में आयु से संबंधित भावों पर शनि, मंगल व केतु का प्रभाव है इस कारण से उनकी हिंसा से, चोट लगने से मृत्यु हुई। अष्टम भाव में स्थिर राशी है। उनकी मृत्यु घर पर ही हुई।

Future Point

15. मृत्यु का समय–निर्धारण

मृत्यु का समय–निर्धारण भी एक बहुत ही जटिल कार्य है। ज्योतिषी किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय का निर्धारण करे भी तो उसे उस व्यक्ति के समक्ष प्रकट करने की मनाही होती है। वह अधिक से अधिक एक सूक्ष्म संकेत दे सकता है, किन्तु, साथ ही उसे बचाव के कुछ उपाय भी बताने चाहिएँ।

मृत्यु के समय का निर्धारण दो अलग–अलग विधियों से किया जा सकता है।

1. दशायु

इसका निर्धारण मारक दशा अन्तर अथवा प्रत्यन्तर दशा के अनुसार, विभिन्न विधियों से आयु निर्णय करने के बाद किया जाता है।

2. गोचर

यदि दशा भी मृत्यु का संकेत दे रही है तब, कुछ निश्चित ग्रहों का गोचर मृत्यु का वाहक हो सकता है। ध्यातव्य है कि गोचर अन्तिम निर्णायक तत्त्व है और गोचर दशा का वशवर्ती या सहायक है। यह स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकता।

दशायु–मारक दशा

कोई भी ग्रह जो किसी मृत्यु दायक भाव का स्वामी हो या यदि वह किसी मारक ग्रह से संबंधित हो तो उसकी प्रवृत्ति मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट प्रदान करने की हो सकती है। ऐसे ग्रह की दशा मारकेश की दशा हो जाती है।

मारक ग्रहों का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है, सुविधा के लिये उनका उल्लेख पुनः किया जा रहा है।

मारक ग्रह

1. द्वितीय भाव स्वामी
2. सप्तम भाव स्वामी
3. द्वितीय भाव से युक्त स्वामी
4. सप्तम भाव से युक्त स्वामी
5. द्वादशम भाव स्वामी
6. द्वादशम भाव से युक्त स्वामी
7. अष्टम भाव और उससे युक्त स्वामी
8. तृतीय भाव और उससे युक्त स्वामी
9. अप्रतिबन्धित मारक शनि

Future Point

मारक दशा (विंशोत्तरी दशा)

कौन सी दशा मारकेश दशा हो सकती है ?

1. किसी जातक की आयु अल्प आयु खण्ड में आती है या मध्य आयु खण्ड में अथवा पूर्ण आयु खण्ड में, यह देखने के लिए जातक के आयु खण्ड का निर्णय किया जाना चाहिए। आयु खण्ड निर्णय के लिए जैमिनी होरा लग्न का उपयोग करते हुए जैमिनी आयुदार्य पर निर्भर किया जा सकता है।
2. आयु खण्ड निर्णय के बाद दशा क्रम देखें :

तारा :

जन्म नक्षत्र	–	जन्म
जन्म नक्षत्र से द्वितीय	–	सम्पत
जन्म नक्षत्र से तृतीय	–	विपत
जन्म नक्षत्र से चतुर्थ	–	क्षेम
जन्म नक्षत्र से पंचम	–	प्रत्यरि
जन्म नक्षत्र से षष्ठम	–	साधक
जन्म नक्षत्र से सप्तम	–	वध
जन्म नक्षत्र से अष्टम	–	मित्र
जन्म नक्षत्र से नवम	–	अतिमित्र

जन्म नक्षत्र से तृतीय, पंचम तथा सप्तम नक्षत्रों के स्वामियों की दशाएं अर्थात् विपत, प्रत्यरि और वध तारा के स्वामियों की दशा प्रतिकूल हैं। इसे देखने की एक और विधि है : जन्म दशा नोट करें। प्रतिकूल दशाएं इस प्रकार होंगी :

- जन्म दशा से तृतीय दशा
- जन्म दशा से पंचम दशा
- जन्म दशा से सप्तम दशा

यदि इनमें से कोई दशा जातक के आयु खण्ड में आवे तो यह तो वह मारकेश की दशा हो जा सकती है।

3. यदि किसी मारक की दशा पूर्व निर्धारित आयु में आए वह मारक दशा हो जा सकती है।
   - यदि सूर्य या चन्द्र मारक भावों का स्वामी हो अथवा अन्य मारकों से युक्त हो तो उसकी दशाएं भी मारकेश दशा हो जा सकती हैं।
   - यदि गुरु, शुक्र या बुध अथवा पूर्ण चन्द्र आदि शुभ ग्रह केन्द्र के स्वामी हों तो वे मारक हो जा सकते हैं।
     - केन्द्र अधिपति दोष के साथ गुरु सबसे बली मारक हो जाता है।
     - शुक्र भी गुरु से थोड़ा कम प्रबल मारक हो जाता है।

Future Point

– शुक्र से कम प्रबल मारक बुध हो जाता है।
– केन्द्र स्वामी के रूप में पूर्ण चन्द्र बुध से भी कम प्रबल मारक हो जाता है।

- अप्रतिबंन्धित मारक शनि की दशा यदि ठीक समय पर हो तो वह अपनी दशा में मृत्यु दे सकता है।

इस प्रकार आयु खण्ड और दशाक्रम के अनुसार कौन सी दशा (दशा–अन्तरदशा या प्रत्यन्तर दशा) संभावित मारक दशा है इसका निरीक्षण सम्भव है। जब मारक दशा का विचार किया जा रहा है, तब केवल एक ही प्रकार की दशा पर निर्भर नहीं करना चाहिए। जैमिनी की चर दशा या स्थिर दशा से या योगिनी दशा से भी इस प्रकार की संभावना की पुष्टि कर लेनी चाहिए।

संभावित दशा का ठीक ठीक पता लगा लेने के बाद मृत्यु का संभावित समय नियत करने के लिये गोचर का प्रयोग करना चाहिए।

घातक गोचर (Fatal transit)

गोचर जन्मकुण्डली में योग का अन्तिम फल प्रकट करता है। हमारे प्रसंग में यह फल का प्रतिपादन वास्तविक मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट के समय करेगा। जब ग्रह उन राशियों में गोचर करते हैं, जिन्हें चन्द्र से देखने पर प्रतिकूल समझा जाता है, तो मृत्यु हो सकती है।

सावधानी : गोचर के नियमों का उपयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वे जातक को भ्रम में डाल सकते हैं। इन्हें निम्नलिखित विचारों के बाद ही लागू किया जाना चाहिए।

1. आयु खण्ड निर्णय।
2. पिण्डायु, अंशायु, निसर्गायु आदि के द्वारा आयु निर्णय।
3. मारक दशा निर्णय।

जब शनि, मंगल, गुरु या सूर्य जन्म (जन्म राशि) चन्द्र में या उससे अष्टम अथवा द्वादशम भाव में गोचर करता है तों स्वास्थ्य खराब, कष्ट या मृत्यु हो सकती है।

शनि का गोचर :

1. यदि शनि जन्म चन्द्र या उससे अष्टम भाव अथवा द्वादशम भाव में गोचर करे तो स्वास्थ्य खराब हो सकता है या मृत्यु हो सकती है। साथ ही इन स्थानों में मंगल अथवा गुरु भी गोचर कर रहा हो तो कष्ट में वृद्धि हो सकती है।
   - शनि अप्रतिबन्धित मारक या यम स्वयं है इसलिए मृत्यु के समय उसकी भूमिका भी किसी न किसी रूप में रहती है।
2. यदि शनि निम्नांकित बिन्दुओं अथवा उनसे त्रिकोणों (प्रथम, पंचम, नवम) में गोचर करे तो कष्ट अथवा मृत्यु हो सकती है।
   - जन्म शनि
   - जन्म चन्द्र

- चन्द्र का राशि स्वामी
- बाइसवें द्रेष्काण का स्वामी
- 64 वां नवांश का स्वामी
- लग्न स्वामी
- अष्टम भाव स्वामी
- गुलिक
- सूर्य से षष्ठम अथवा अष्टम भाव

3. यदि शनि कुछ खास अंशों पर गोचर करे तो भी ऐसे ही फल दे सकता है।
   (i) छठे, आठवें और बारहवें भावों के भोगांशों को जोड़ने पर एक निश्चित भोगांश प्राप्त होगा। यदि यह बारह राशियों से अधिक हो तो राशि का फल प्राप्त करने के लिए इसमें से बारह अथवा बारह का गुणज घटाएं। इस भोगांश पर शनि का गोचर प्रतिकूल होगा।
   (ii) लग्न स्वामी, शनि तथा गुलिक के भोगांशों को जोड़ने पर एक निश्चित भोगांश प्राप्त होगा। इस भोगांश पर शनि का गोचर प्रतिकूल होता है।
4. अष्टक वर्ग विधि : त्रिकोण तथा एकाधिपति शोधन के पूर्व शनि के अष्टकवर्ग में शनि से सप्तम अथवा अष्टम राशि में शुभ बिन्दुओं की संख्या से शनि के शोध्यपिण्ड का गुणा करें और गुणनफल को 27 से भाग दें। शेष अश्विनी से गणना करने पर किसी निश्चित नक्षत्र को निर्दिष्ट करेगा।

$$\text{शोध्य पिण्ड शनि} \times \frac{\text{शोधन पूर्व शनि के अष्टक वर्ग में शनि से सप्तम या अष्टम राशि में शुभ बिन्दु}}{27}$$

   – शेष की गणना अश्विनी से की जाती है।

गोचर में जब शनि इस नक्षत्र पर, या इसके त्रिकोण नक्षत्रों पर आता है। तब कष्ट की संभावना होती है।

गुरु का गोचर :

1. यदि गुरु निम्नलिखित में से किसी पर गोचर करे तो मृत्यु अथवा गम्भीर कष्ट की सम्भावना होती है।
   (i) अष्टम भाव स्वामी।
   (ii) चन्द्र राशि
   (iii) लग्न
   (iv) 22 वां द्रेष्काण स्वामी
   (v) 64 वां नवांश स्वामी
   (vi) राहु

Future Point

2. अष्टक वर्ग विधि

शोधन के पूर्व शनि के अष्टक वर्ग में गुरु के द्वारा अधिकृत राशी के बिन्दुओं को शनि के शोध्य पिंड से गुणा करें। गुणनफल को 12 से भाग दें। शेष की मेष से गणना करने पर एक राशि प्राप्त होती है। इस राशि अथवा इसकी त्रिकोण राशियों पर गुरु का गोचर घातक सिद्ध हो सकता है।

$$\frac{\text{शनि का शोध्यपिण्ड} \times \text{शोधन के पूर्व शनि के अष्टक वर्ग में गुरु के द्वारा अधिकृत राशि के बिन्दु}}{12}$$

शेष की मेष से गणना की जाती है।

सूर्य का गोचर :

1. यदि सूर्य जन्म राशि अथवा इससे सातवें, आठवें अथवा बारहवें भाव पर गोचर करे और यदि मृत्यु के अन्य सभी संकेत विद्यमान हों, तो इससे मृत्यु का माह ज्ञात होता है।
2. समान परिस्थितियों में ही अष्टम भाव स्वामी की राशि पर सूर्य के गोचर से मृत्यु का संकेत ज्ञात किया जा सकता है।

चन्द्र का गोचर :

1. जन्म चन्द्र पर चन्द्र के गोचर से 3–4 दिनों के अन्दर मृत्यु का समय ज्ञात किया जा सकता है। इन्दिरा गाँधी की जन्मकुण्डली में इसकी व्याख्या की जाएगी। उनकी मृत्यु के समय गोचर का चन्द्र जन्म चन्द्र से होकर गुजरा ही था।
2. जन्म सूर्य पर चन्द्र के गोचर के फलस्वरूप मृत्यु हो सकती है।
3. अष्टम भाव स्वामी पर भी चन्द्र का गोचर मृत्यु का वाहक हो सकता है।

जन्म नक्षत्र से कुछ निश्चित नक्षत्रों पर ग्रहों का गोचर –

- जब सूर्य जन्म नक्षत्र से 26वें और 27वें नक्षत्र पर गोचर करता है।
- जब मंगल जन्म नक्षत्र से प्रथम तथा द्वितीय नक्षत्रों पर गोचर करता है।
- जब शनि, राहु अथवा केतु जन्म नक्षत्र से 22वें, 23वें और 26वें अथवा 27वें नक्षत्र पर गोचर करता है।

इन सभी ग्रहों के गोचर में, यदि मृत्यु के अन्य लक्षण भी उपस्थित हों, तो मृत्यु अथवा 'मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है।

अष्टक वर्ग से गोचर :

अष्टक वर्ग गोचर–विश्लेषण की एक उत्कृष्ट प्रणाली है। अष्टक वर्ग में किसी राशि के प्रत्येक $3^{o}45'$ (कक्ष्या) के माध्यम से किसी ग्रह के गोचर का सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव है। इसके द्वारा किया गया फलादेश अत्यन्त परिशुद्ध होता है। इसमें गोचर कर रहे ग्रह के प्रस्थारक का अवलोकन करना चाहिए।

Future Point

यदि ग्रह किसी शुभ बिन्दु प्राप्त कक्ष्या से होकर गोचर कर रहा हो तो परिणाम उत्तम होगा अन्यथा नहीं। जहाँ मारक का सवाल है वहाँ यदि वह मृत्यु समय के आसपास किसी संवेदनशील बिन्दु रिक्त कक्ष्या से होकर गोचर करे तो मृत्यु हो सकती है।

इन्दिरा गाँधी की मृत्यु
तिथि 31–10–1984, समय 10 पूर्वाह्न (लगभग)
स्थान–दिल्ली
(जन्मकुण्डली पर लागू गोचर)

(रेखांकित ग्रह
गोचर के ग्रह हैं।)

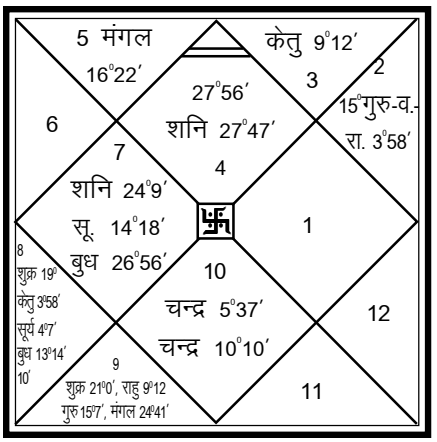

आयु निर्धारण :

अंशायु विधि के अनुसार इन्दिरा गाँधी की आयु 67 वर्ष 9 महीने है।

मृत्यु के समय दशा

उनकी मृत्यु के समय शनि–राहु–राहु दशा चल रही थी।

शनि (महादशा नाथ) :

- उनके लग्न में स्थित, सप्तम तथा अष्टम भाव स्वामी (मारक) है।
- उसकी दृष्टि चन्द्र पर है जो उनका लग्न स्वामी है।
- चन्द्र से द्वितियेश होकर चन्द्र से सप्तम में स्थित है।

राहु (अन्तरदशा और प्रत्यन्तर दशानाथ)

राहु लग्न से छठे और चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित है।

- राहु शुक्र के साथ है जो केन्द्र तथा 11वें भाव का स्वामी और इसलिए कर्क लग्न के लिए अशुभ है।

Future Point

- शनिवत राहू : शनि के समान व्यवहार करना राहु की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। शनि इस कुण्डली में मारक है और राहु उसके समान व्यवहार कर रहा है।
- राहु का राशीश गुरु और षष्ठम भाव (शारीरिक चोट) का स्वामी भी है। अतः राहु राशीश के समान व्यवहार कर रहा है।

इस तरह महादशा स्वामी, अन्तरदशा स्वामी तथा प्रत्यन्तरदशा स्वामी मारकत्व से युक्त हैं।

मृत्यु के समय गोचर :

शनि

- शनि तुला राशि में विशाखा नक्षत्र से गोचर कर रहा था, जो जन्म नक्षत्र से 23वां नक्षत्र है।
- जन्म लग्न तथा अष्टमेश (शनि) पर उसकी नजदीकी दृष्टि थी।
- वह 22वें द्रेष्काण के अत्यन्त निकट था जो तुला में आता है और एक संवेदनशील बिन्दु हो जाता है।
- 22वें द्रेष्काण स्वामी तथा 64वें नवांश स्वामी शुक्र को वह निकट दृष्टि से देख रहा है। (अंशों के अनुसार)
- वह अपने प्रस्थारक में, एक रिक्ता कक्ष्या से गोचर कर रहा था।
- चोट के षष्ठ भाव पर उसकी दृष्टि थी।
- उस पर कोई शुभ प्रभाव नहीं था।

राहु :

राहु ने जन्म गुरु (षष्टेश) पर गोचर किया था।

केतु :

केतु का द्वितियेश (मारक) सूर्य के ऊपर उसी समय गोचर हुआ था।

गुरु :

गुरु ने जन्म राहु पर गोचर किया था।

चन्द्र :

चन्द्र जन्म चन्द्र के ऊपर से होकर उसी समय गुजरा था। (यह बहुधा देखा जाता है कि मृत्यु के समय गोचर का चन्द्र जन्म चन्द्र के बहुत निकट होता है।)

मंगल :

- मंगल शारीरिक चोट के षष्ठ भाव से गोचर कर रहा था।
- उसने जन्म राहु के ऊपर गोचर किया था।
- वह चन्द्र से 12वें भाव में गोचर कर रहा था।
- अष्टम भाव स्वामी शनि की उस पर नजदीकी दृष्टि थी। शनि तथा मंगल दोनों का षष्ठम भाव तथा लग्न पर प्रभाव था। शनि तथा मंगल दोनो ही हत्या करने में सक्षम हैं। इनके साथ केतु की भी लग्न पर दृष्टि थी– जो हत्या का पूर्ण योग बना रही थी।

Future Point

उपसंहार :

सम्पूर्ण दशा तथा गोचर से स्थिति की गम्भीरता का पता चल रहा है और रक्षा के रुप में शुभ प्रभाव (स्थिति–दृष्टि–योग) का आभाव था।

इन्दिरा गाँधी की उनके सिख अंगरक्षकों ने 31 अक्तूबर 1984 की सुबह निर्मम हत्या कर दी और उन्हें बचाया नहीं जा सका। उनकी हत्या के समय उनकी आयु लगभग 67 वर्ष थी।

अभ्यास

प्र. 1. दशा के अनुसार मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट का समय–निर्धारण कैसे किया जा सकता है ?

प्र. 2. किसी कष्टदायक दशा का सूक्ष्म निरूपण करने में किन ग्रहों के गोचर का उपयोग किया जा सकता है ?

प्र. 3. किसी कष्टदायक दशा की पहचान करने में शनि और गुरु के गोचर का उपयोग कैसे किया जाता है ?

Future Point

16. उपसंहार

यह स्पष्ट हो चुका होगा कि आयु निर्णय एक अत्यन्त ही गूढ़ व गम्भीर विषय है। जहाँ तक सम्भव हो, सामान्य परिस्थितियों में ज्योतिषी को मृत्यु के माह तथा दिन तक की गणना से बचना चाहिए क्योंकि गणना की कोई विधि अत्यंत सही और सटीक नहीं है। आयु खण्ड का स्थूल निर्णय करना चाहिए। जन्मकुण्डली का व्यापक रूप से अवलोकन किया जाना चाहिए और दशाक्रम नोट किया जाना चाहिए।

सामान्यतया, यदि केन्द्र तथा त्रिकोण में शुभ ग्रह हों और तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भावों में अशुभ ग्रह स्थित हों, अष्टम तथा द्वादशम भाव रिक्त हों, लग्नेश अष्टम भाव स्वामी से बली हो और दशाक्रम अनुकूल हो तो यह दीर्घायु का द्योतक है।

किसी छोटे शिशु की जन्मकुण्डली पर विचार करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं का अवलोकन अत्यन्त आवश्यक है :

1. चन्द्र की अवस्था
2. लग्न की अवस्था
3. बालारिष्ट योग
4. अरिष्ट भंग

बारह वर्ष की अवस्था तक किसी शिशु की आयु की गणना करना उचित नहीं है।

आयुनिर्णय जैसे गूढ़ विषय पर लिखने का मैने प्रयत्न किया है। अनेक विधियों का विचार किया गया है। साथ ही यह कहना मैं आवश्यक समझती हूँ कि किसी भी विधि की संपूर्ण गैरंटी नहीं ली जा सकती है, इसलिए अपनी कुंडली का, या अपने निकट संबंधियों की कुंडलियों का आयु निर्णय, जहां तक हो सके न करें, और यह स्मरण रखें कि :

अच्छे कर्मों से आयु सीमा में वृद्धि, तथा बुरे कर्मों से ह्रास होता है।

अभ्यास

प्र. 1. आयु निर्णय करते समय कौन सी सावधानियाँ बरतनी चाहिएँ ?

प्र. 2. दीर्घ आयु के सामान्य लक्षण क्या हैं ?

प्र. 3. किसी शिशु की जन्मकुण्डली का अवलोकन किस प्रकार किया जाना चाहिए ?

Future Point

17. ग्रन्थ सूची

1. 'आयुनिर्णय'—आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ पर्वतीय
   — डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र
2. 'Prasna Marga' - By Dr. B.V. Raman
3. 'Jatak Parijat' - By Subramanya Sastri
4. 'Span of life' - By Govindu Sri Ramamurti
5. 'Updesh Sutra of Jaimini' - By K.V. Abhyankar
6. 'Nehru Dynasty' - By K.N. Rao
7. 'Hindu Astrological Calculations' - By Usha Shashi
8. 'Future Samachar' - By Future Point
9. 'Essentials of Medical Astrology' - By Dr. K.S. Charak.

Future Point

Future Point

सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर

लियो गोल्ड

केवल 4999/– रुपये में *

उपलब्ध प्रोग्राम

ज्योतिष(गणना)	ज्योतिष(फलादेश)	मिलान	वर्षफल
के. पी. + प्रश्न	लाल किताब	अंकशास्त्र	पंचांग

डेमो कॉपी केवल 250 रुपये में

अपनी जन्म तिथि पर सेट किये हुए लियो गोल्ड की डेमो कॉपी द्वारा आप ज्योतिष पर आधारित सभी गणनाएं, वर्षफल, एस्ट्रोग्राफ, प्राण दशाएं आदि सूक्ष्म गणनाएं कर सकते हैं एवं प्रिंट कर सकते हैं। साथ ही 'प्रश्न जातक' के 20 से अधिक प्रोग्राम, जैसे टैरट कार्ड, बायोग्राफ, रमल आदि इसमें शामिल हैं, जिनके द्वारा आप किसी भी जातक के प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। इसमें कई पुस्तकें एवं मंत्रोच्चारण आदि भी शामिल हैं। डेमो कॉपी प्राप्त करने हेतु आप अपना नाम, जन्म तारीख, समय, स्थान और अपना पता एवं फ्यूचर पॉइंट प्रां. (लि.) के नाम 250 रुपये का चैंक, ड्राफ्ट या मनीआर्डर सहित निम्न पते पर भेजें :

फ्यूचर पॉइंट (प्रा.) लिमिटेड

एच–1/ए, हौज खास, नयी दिल्ली–110016, फोन : 26569200–01, 26569800–01
ई–मेल : mail@futurepointindia.com, वेब : www.futurepointindia.com

सर्वश्रेष्ठ तंत्र–मंत्र एवं ज्योतिषीय पत्रिका

फ्यूचर समाचार

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

इससे तो बेहतर है सदस्य ही बन जाएं

फ्यूचर समाचार की सदस्यता शुल्क

अवधि	साधारण डाक द्वारा	रजिस्टर्ड/कोरियर द्वारा	विदेशी मुद्रा
1 वर्ष	325/–रु.	500/– रु.	$30
2 वर्ष	600/–रु.	900/– रु.	$50
3 वर्ष	900/–रु.	1350/– रु.	$75
4. आजीवन	3000/–रु.	5000/– रु.	$300

जिस अवधि के लिए ग्राहक बनना चाहें, उसकी राशि का डीडी/चेक फ्यूचर पॉइंट के नाम से भेजें, और पीछे अपना नाम और पूरा पता पिन कोड सहित जरूर लिखें।

नोट : *साधारण डाक द्वारा भेजी जाने वाली पत्रिका के साथ उपहार नहीं भेजे जाएंगे। आपको पत्रिका के 4 महीने के उपहार कोरियर द्वारा एक साथ भेजे जाएंगे।* कोरियर द्वारा पत्रिका उपहार सहित भेजी जाएगी।